अध्याय १५

श्री चैतन्य महाप्रभु का दिव्य उन्माद

अन्त्यलीला के पन्द्रहवे अध्याय का सारांश इस प्रकार है। भगवान् जगन्नाथ का उपलभोग उत्सव देखने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु को एक बार फिर भावावेश का अनुभव हुआ। जब उन्होंने समुद्र के तट पर स्थित उद्यान को देखा, तो पुनः उन्होंने सोचा कि वे वृन्दावन में हैं और जब उन्होंने विभिन्न लीलाओं में रत कृष्ण के बारे में सोचना प्रारम्भ किया, तो एक बार पुनः उन्हें दिव्य भावों न उत्तेजित कर दिया। रासनृत्य की रात को कृष्ण की अनुपस्थिति से दुःखित गोपियाँ कृष्ण को एक जंगल से दूसरे जंगल में ढूँढ़ती रहीं। श्री चैतन्य महाप्रभु गोपियों के सदृश ही दिव्य विचारों को ग्रहण करके भावावेश से पूरित हो उठे। स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने महाप्रभु के भावों के अनुकूल ही *गीत गोविन्द* का एक श्लोक सुनाया। तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने *भावोदय, भावसन्धि* तथा *भाव-शाबल्य* इत्यादि विकारों को प्रकट किया। महाप्रभु ने आठों प्रकार के सात्त्विक विकारों का अनुभव किया और उनका अत्यधिक आस्वादन किया।

दुर्गमे कृष्ण-भावाब्धौ निमग्नोन्मग्न-चेतसा ।
गौरेण हरिणा प्रेम-मर्यादा भूरि दर्शिता ॥ १॥

दुर्गमे कृष्ण-भावाब्धौ निमग्नोन्मग्न-चेतसा ।
गौरेण हरिणा प्रेम-मर्य्यादा भूरि दर्शिता ॥ १॥

दुर्गमे—समझना अत्यन्त कठिन; **कृष्ण-भाव-अब्धौ**—कृष्ण-प्रेम के सागर में; **निमग्न**—निमग्न; **उन्मग्न-चेतसा**—निमग्न हृदय; **गौरेण**—श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा; **हरिणा**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् द्वारा; **प्रेम-मर्यादा**—दिव्य प्रेम की उच्च अवस्था; **भूरि**—विभिन्न प्रकार से; **दर्शिता**—प्रदर्शित किया।

अनुवाद

ब्रह्माजी जैसे देवताओं के लिए भी कृष्ण के ऊर्मिपूर्ण प्रेम के सागर को समझ पाना कठिन है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी लीलाएँ सम्पन्न करके अपने आपको उस सागर में निमज्जित कर दिया और उनका हृदय उसी प्रेम में निमग्न हो गया। इस तरह उन्होंने कृष्ण के दिव्य प्रेम के उच्च पद को विविध प्रकार से प्रकट किया।

जय जय श्री-कृष्ण-चैतन्य अधीश्वर ।
जय नित्यानन्द पूर्णानन्द-कलेवर ॥२॥

जय जय श्री-कृष्ण-चैतन्य अधीश्वर ।
जय नित्यानन्द पूर्णानन्द-कलेवर ॥ २॥

जय जय—जय जय; **श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **अधीश्वर**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द की; **पूर्ण-आनन्द**—दिव्य आनन्द से पूरित; **कलेवर**—शरीर वाले।

अनुवाद

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण चैतन्य की जय हो! दिव्य आनन्द से पूरित शरीर वाले भगवान् नित्यानन्द की जय हो!

जयाद्वैताचार्य कृष्ण-चैतन्य-प्रियतम ।
जय श्रीवास-आदि प्रभुर भक्त-गण ॥३॥

जयाद्वैताचार्य कृष्ण-चैतन्य-प्रियतम ।
जय श्रीवास-आदि प्रभुर भक्त-गण ॥ ३॥

जय—जय हो; **अद्वैत-आचार्य**—अद्वैत आचार्य की; **कृष्ण-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **प्रिय-तम**—अत्यन्त प्रिय; **जय**—जय हो; **श्रीवास-आदि**—श्रीवास ठाकुर आदि; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **भक्त-गण**—भक्तों की।

अनुवाद

भगवान् चैतन्य के अत्यन्त प्रिय श्री अद्वैत आचार्य की जय हो! तथा श्रीवास ठाकुर इत्यादि महाप्रभु के भक्तों की जय हो!

এই-মত মহাপ্রভু রাত্রি-দিবসে ।
আত্ম-স্ফূর্তি নাহি কৃষ্ণ-ভাবাবেশে ॥৪॥

এइ-মত মহাপ্রভু রাত্রি-দিবসে ।
আত্ম-স্ফূর্তি নাহি কৃষ্ণ-ভাবাবেশে ॥ ৪॥

এइ-মত—इस तरह; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **রাত্রি-দিবসে**—रात और दिन; **আত্ম-স্ফূর্তি নাহি**—अपने आपको भूलकर; **কৃষ্ণ-ভাব-আবেশে**—कृष्ण के ऊर्मिपूर्ण प्रेम में निमग्न होकर।

अनुवाद

इस तरह कृष्ण-प्रेम रूपी सागर में निमग्न होने से श्री चैतन्य महाप्रभु दिन-रात अपने आपको भूले रहते।

কভু ভাবে মগ্ন, কভু অর্ধ-বাহ্য-স্ফূর্তি ।
কভু বাহ্য-স্ফূর্তি,—তিন রীতে প্রভু-স্থিতি ॥৫॥

কভু ভাবে মগ্ন, কভু অর্ধ-বাহ্য-স্ফূর্তি ।
কভু বাহ্য-স্ফূর্তি,—তিন রীতে প্রভু-স্থিতি ॥ ৫॥

কভু—कभी; **ভাবে**—भावाविष्ट; **মগ্ন**—मग्न; **কভু**—कभी; **অর্ধ**—आधे; **বাহ্য-স্ফূর্তি**—बाह्य चेतना में; **কভু**—कभी; **বাহ্য-স্ফূর্তি**—पूर्ण बाह्य चेतना में; **তিন রীতে**—तीन प्रकार से; **প্রভু-স্থিতি**—स्थिति में भगवान्।

अनुवाद

महाप्रभु तीन प्रकार की चेतना में अपनी स्थिति बनाये रखते थे—कभी वे पूर्णतया भावाविष्ट हो जाते, कभी आधी बाह्य चेतना में होते, तो कभी पूर्ण बाह्य चेतना में होते।

স্নান, দর্শন, ভোজন দেহ-স্বভাবে হয় ।
কুমারের চাক যেন সতত ফিরয় ॥৬॥

স্নান, দর্শন, ভোজন দেহ-স্বভাবে হয় ।
কুমারের চাক যেন সতত ফিরয় ॥ ৬॥

স্নান—स्नान करके; **দর্শন**—मन्दिर में जाना; **ভোজন**—भोजन करना; **দেহ-স্বভাবে**—

शरीर के स्वभाव से; **हय**—होते; **कुमारेर चाक**—कुम्हार की चाक; **प्रेन**—जैसे; **सतत**—हमेशा; **फिरय**—घूमना।

अनुवाद

वस्तुतः श्री चैतन्य महाप्रभु सदैव भावावेश में निमग्न रहते थे, किन्तु जिस तरह कुम्हार का चाक बिना छुए ही चलता रहता है, उसी तरह महाप्रभु के शारीरिक कार्य यथा स्नान करना, जगन्नाथजी के मन्दिर में दर्शन के लिए जाना तथा भोजन करना स्वयं अपने आप होते रहते थे।

एक-दिन करेन प्रभु जगन्नाथ दरशन ।
जगन्नाथे देखे साक्षात्व्रजेन्द्र-नन्दन ॥७॥

एक-दिन करेन प्रभु जगन्नाथ दरशन ।
जगन्नाथे देखे साक्षात्व्रजेन्द्र-नन्दन ॥७॥

एक-दिन—एक दिन; **करेन**—किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **दरशन**—दर्शन; **जगन्नाथे**—भगवान् जगन्नाथ; **देखे**—उन्होंने देखा; **साक्षात्**—साक्षात्; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—महाराज नन्द के पुत्र।

अनुवाद

एक दिन जब श्री चैतन्य महाप्रभु मन्दिर में भगवान् जगन्नाथ की ओर देख रहे थे, तब उन्हें जगन्नाथजी साक्षात् नन्द महाराज के पुत्र कृष्ण प्रतीत हुए।

एक-बारे स्फुरे प्रभुर कृष्णेर पञ्च-गुण ।
पञ्च-गुणे करे पञ्चेन्द्रिय आकर्षण ॥८॥

एक-बारे स्फुरे प्रभुर कृष्णेर पञ्च-गुण ।
पञ्च-गुणे करे पञ्चेन्द्रिय आकर्षण ॥८॥

एक-बारे—एक बार; **स्फुरे**—प्रकट हुए; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **पञ्च-गुण**—पाँच गुण; **पञ्च-गुणे**—पाँच गुण; **करे**—किया; **पञ्च-इन्द्रिय**—पाँच इन्द्रियाँ; **आकर्षण**—आकर्षण।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु को जगन्नाथ जी में स्वयं कृष्ण की अनुभूति

हुई, तो महाप्रभु की पाँचों इन्द्रियाँ भगवान् कृष्ण के पाँच गुणों के आकर्षण में तुरन्त समा गईं।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण के सौन्दर्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु की आँखों को आकृष्ट कर लिया। कृष्ण के गायन तथा उनकी वंशीध्वनि ने महाप्रभु के कानों को, कृष्ण के चरणकमलों की दिव्य सुगन्ध ने उनके नथुनों को, कृष्ण की मधुरता ने उनकी जीभ को तथा कृष्ण के शारीरिक स्पर्श ने महाप्रभु की स्पर्शेन्द्रिय को आकृष्ट कर लिया। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु की पाँच इन्द्रियों में से हर इन्द्रिय भगवान् कृष्ण के पाँचों गुणों में से किसी एक से आकृष्ट हो गई।

एक-मन पञ्च-दिके पञ्च-गुण टाने ।
टानाटानि प्रभुर मन हैल अगेयाने ॥९॥

एक-मन पञ्च-दिके पञ्च-गुण टाने ।
टानाटानि प्रभुर मन हैल अगेयाने ॥ ९॥

एक-मन—एक मन; **पञ्च-दिके**—पाँच दिशाओं में; **पञ्च-गुण**—पाँच गुण; **टाने**—आकर्षित; **टानाटानि**—रस्साकसी में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **मन**—मन; **हैल**—हुआ; **अगेयाने**—अचेत।

अनुवाद

श्री चैतन्य महापभु का एक मन भगवान् कृष्ण के पाँच दिव्य गुणों से पाँच दिशाओं में उसी तरह आकर्षित हो रहा था, जिस तरह रस्साकसी में होता है। अतएव महाप्रभु अचेत हो गये।

हेन-काले ईश्वरेर उपल-भोग सरिल ।
भक्त-गण महाप्रभुरे घरे लञा आइल ॥१०॥

हेन-काले ईश्वरेर उपल-भोग सरिल ।
भक्त-गण महाप्रभुरे घरे लञा आइल ॥ १०॥

हेन-काले—उसी समय; **ईश्वरेर**—भगवान् जगन्नाथ का; **उपल-भोग**—उपलभोग उत्सव; **सरिल**—समाप्त हुआ; **भक्त-गण**—भक्तगण; **महाप्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **घरे**—घर; **लञा आइल**—ले आये।

अनुवाद

उसी समय भगवान् जगन्नाथ का उपलभोग उत्सव समाप्त हुआ और जो भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ-साथ मन्दिर गये थे, वे उन्हें घर लौटा ले आये।

स्वरूप, रामानन्द,—एइ दुइ-जन लञा ।
विलाप करेन दुँहार कण्ठेते धरिया ॥ ११ ॥
स्वरूप, रामानन्द,—एइ दुइ-जन लञा ।
विलाप करेन दुँहार कण्ठेते धरिया ॥ ११ ॥

स्वरूप—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **एइ दुइ-जन**—यह दो जन; **लञा**—साथ; **विलाप करेन**—विलाप करते; **दुँहार**—दोनों के; **कण्ठेते**—गले; **धरिया**—पकड़ लिया।

अनुवाद

उस रात श्री चैतन्य महाप्रभु की सेवा में स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय रहे। महाप्रभु उन दोनों के गलें में हाथ डालकर विलाप करने लगे।

कृष्णेर वियोगे राधार उत्कण्ठित मन ।
विशाखारे कहे आपन उत्कण्ठा-कारण ॥ १२ ॥
कृष्णेर वियोगे राधार उत्कण्ठित मन ।
विशाखारे कहे आपन उत्कण्ठा-कारण ॥ १२ ॥

कृष्णेर—भगवान् कृष्ण के; **वियोगे**—महान् वियोग से; **राधार**—श्रीमती राधारानी ने; **उत्कण्ठित**—अत्यधिक व्याकुल; **मन**—मन से; **विशाखारे**—विशाखा से; **कहे**—कहा; **आपन**—अपना; **उत्कण्ठा-कारण**—उत्कण्ठा का कारण।

अनुवाद

जब श्रीमती राधारानी कृष्ण के महान् वियोग से अत्यधिक व्याकुल हो गईं, तब उन्होंने विशाखा से अपनी महान् चिन्ता तथा व्याकुलता का कारण बतलाने वाला एक श्लोक कहा।

सेई श्लोक पड़ि' आपने करे मनस्ताप ।
श्लोकेर अर्थ शुनाय दुँहारे करिया विलाप ॥ १३ ॥

सेइ श्लोक पड़ि' आपने करे मनस्ताप ।
श्लोकेर अर्थ शुनाय दुँहारे करिया विलाप ॥ १३ ॥

सेइ श्लोक—उसी श्लोक को; **पड़ि'**—पढ़कर; **आपने**—स्वयं; **करे**—किया; **मनः-ताप**—मन के संताप भाव को व्यक्त; **श्लोकेर**—इस श्लोक का; **अर्थ**—अर्थ; **शुनाय**—व्याख्या सुनाई; **दुँहारे**—दोनों को; **करिया विलाप**—विलाप करते हुए।

अनुवाद

उसी श्लोक को सुनाकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने मन के संताप भाव को व्यक्त किया। तब उन्होंने अत्यन्त विलाप करते हुए स्वरूप दामोदर तथा रामानन्द राय को उस श्लोक की व्याख्या सुनाई।

सौन्दर्यामृत-सिन्धु-भङ्ग-ललना-चित्ताद्रि-सम्प्लावकः
कर्णानन्दि-सनर्म-रम्य-वचनः कोटीन्दु-शीताङ्गकः ।
सौरभ्यामृत-सम्प्लवावृत-जगत्पीयूष-रम्याधरः
श्री-गोपेन्द्र-सुतः स कर्षति बलात्पञ्चेन्द्रियाण्यालि मे ॥ १४ ॥

सौन्दर्यामृत-सिन्धु-भङ्ग-ललना-चित्ताद्रि-सम्प्लावकः
कर्णानन्दि-सनर्म-रम्य-वचनः कोटीन्दु-शीताङ्गकः ।
सौरभ्यामृत-सम्प्लवावृत-जगत्पीयूष-रम्याधरः
श्री-गोपेन्द्र-सुतः स कर्षति बलात्पञ्चेन्द्रियाण्यालि मे ॥ १४ ॥

सौन्दर्य—उनका सौंदर्य; **अमृत-सिन्धु**—अमृत सागर की; **भङ्ग**—लहरों से; **ललना**—स्त्रीयों का; **चित्त**—हृदय; **अद्रि**—पहाड़ियाँ; **सम्प्लावकः**—आप्लावित; **कर्ण**—कानों से; **आनन्दि**—आनन्द प्रदान करते हुए; **स-नर्म**—आनन्द से; **रम्य**—सुन्दर; **वचनः**—जिसका आवाज; **कोटि-इन्दु**—करोड़ों चन्द्रमाओं से; **शीत**—अधिक शीतल; **अङ्गकः**—जिनका शरीर; **सौरभ्य**—उनकी सुगन्ध; **अमृत**—अमृत का; **सम्प्लव**—आप्लावित; **आवृत**—ढक दिया; **जगत्**—समग्र जगत्; **पीयूष**—अमृत; **रम्य**—सुन्दर; **अधरः**—जिनके होंठ; **श्री-गोप-इन्द्र**—नन्द महाराज के; **सुतः**—पुत्र; **सः**—वे; **कर्षति**—आकर्षित करते हैं; **बलात्**—बलपूर्वक; **पञ्च-इन्द्रियाणि**—पाँचों इन्द्रियों को; **आलि**—हे सखी; **मे**—मेरी।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा : "'यद्यपि गोपियों के हृदय ऊँची

पहाड़ियों के सदृश हैं, किन्तु वे कृष्ण के सौन्दर्य रूपी अमृत-सागर की लहरों से आप्लावित हैं। उनकी मधुर वाणी उनके कानों में प्रविष्ट होकर उन्हें दिव्य आनन्द प्रदान करती है। उनके शरीर का स्पर्श करोड़ों चन्द्रमाओं से भी अधिक शीतल है और उनकी शारीरिक सुगन्ध का अमृत सम्पूर्ण जगत् को आप्लावित करता है। हे सखी, वे कृष्ण, जो नन्द महाराज के पुत्र हैं और जिनके होंठ अमृत तुल्य हैं, मेरी पाँचों इन्द्रियों को बलपूर्वक खींच रहे हैं।'

तात्पर्य

यह श्लोक श्रील कृष्णदास कविराज कृत *गोविन्दलीलामृत* (८.३) में पाया जाता है।

कृष्ण-रूप-शब्द-स्पर्श, सौरभ्य-अधर-रस,
यार माधुर्य कहन ना याय ।
देखि' लोभे पञ्च-जन, एक अश्व——मोर मन,
चड़ि' पञ्च पाँच-दिके धाय ॥ १५ ॥

कृष्ण-रूप-शब्द-स्पर्श, सौरभ्य-अधर-रस,
यार माधुर्य कहन ना याय ।
देखि' लोभे पञ्च-जन, एक अश्व——मोर मन,
चड़ि' पञ्च पाँच-दिके धाय ॥ १५ ॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण का; **रूप**—सौन्दर्य; **शब्द**—शब्द; **स्पर्श**—स्पर्श; **सौरभ्य**—सुगन्ध; **अधर**—अधरों (होठों) का; **रस**—स्वाद; **यार**—जिनकी; **माधुर्य**—मधुरता; **कहन**—वर्णन करना; **ना याय**—सम्भव नहीं है; **देखि'**—देखना; **लोभे**—लोभ में; **पञ्च-जन**—पाँच जन; **एक**—एक; **अश्व**—घोड़ा; **मोर**—मेरा; **मन**—मन; **चड़ि'**—चढ़ जाना; **पञ्च**—सभी पाँच; **पाँच-दिके**—पाँच दिशाओं में; **धाय**—दौड़ते हैं।

अनुवाद

"भगवान् कृष्ण का सौन्दर्य, उनके शब्दों की ध्वनि तथा उनकी वंशी की ध्वनि, उनका स्पर्श, उनकी सुगन्ध तथा उनके अधरों का स्वाद—ये सब अवर्णनीय मधुरता से ओतप्रोत हैं। जब ये सारे गुण मेरी पाँचों इन्द्रियों को एकाएक आकृष्ट करते हैं, तो मेरी सारी इन्द्रियाँ मेरे मन रूपी अकेले

घोड़े पर एक साथ चढ़ जाती हैं, किन्तु वे पाँच विभिन्न दिशाओं में जाना चाहती हैं।

सखि हे, शुन मोर दुःखेर कारण
मोर पञ्चेन्द्रिय-गण, महा-लम्पट दस्यु-गण, ।
सबे कहे,—हर' पर-धन ॥ १६॥

सखि हे, शुन मोर दुःखेर कारण
मोर पञ्चेन्द्रिय-गण, महा-लम्पट दस्यु-गण, ।
सबे कहे,—हर' पर-धन ॥ १६॥

सखि—सखी; **हे**—हे; **शुन**—कृपया सुनो; **मोर**—मेरे; **दुःखेर कारण**—दुःख का कारण; **मोर**—मेरे; **पञ्च-इन्द्रिय-गण**—पाँच इन्द्रियों का बोध; **महा**—बहुत; **लम्पट**—असंयमी; **दस्यु-गण**—धूर्त; **सबे कहे**—सब कहते हैं; **हर'**—लूटते हैं; **पर-धन**—दूसरों की सम्पत्ति।

अनुवाद

"हे सखी, मेरे दुःख का कारण सुनो। मेरी पाँचों इन्द्रियाँ वस्तुतः असंयमी धूर्त हैं। वे भलीभाँति जानती हैं कि कृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं, किन्तु तो भी वे कृष्ण की सम्पत्ति का हरण करना चाहती हैं।

एक अश्व एक-क्षणे, पाँच पाँच दिके टाने,
एक मन कोन्दिके याय? ।
एक-काले सबे टाने, गेल घोड़ार पराणे,
एइ दुःख सहन ना याय ॥ १७॥

एक अश्व एक-क्षणे, पाँच पाँच दिके टाने,
एक मन कोन्दिके याय? ।
एक-काले सबे टाने, गेल घोड़ार पराणे,
एइ दुःख सहन ना याय ॥ १७॥

एक—एक; **अश्व**—घोड़ा; **एक-क्षणे**—एक समय पर; **पाँच**—पाँच व्यक्ति; **पाँच दिके**—पाँच दिशाओं में; **टाने**—खींचती हैं; **एक**—एक; **मन**—मन; **कोन् दिके**—किस दिशा में; **याय**—जायेगा; **एक-काले**—एक समय; **सबे**—सब; **टाने**—खींचते हैं; **गेल**—जायेंगे; **घोड़ार**—घोड़े का; **पराणे**—जीवन; **एइ**—यह; **दुःख**—दुःख; **सहन**—सहन करना; **ना याय**—सम्भव नहीं है।

अनुवाद

"मेरा मन उस अकेले घोड़े के समान है, जिस पर दृष्टि इत्यादि पाँच इन्द्रियाँ आरूढ़ हैं। हर इन्द्रिय उस घोड़े पर आरूढ़ होना चाहती है। इस तरह वे मन को एक साथ पाँच दिशाओं में खींचती हैं। तो यह किस दिशा में जायेगा? यदि वे सब इकट्ठी खींचती हैं, तो बेचारा घोड़ा निश्चित रूप से अपने प्राण त्याग देगा। भला मैं इस क्रूरता को कैसे सह सकती हूँ?

ইন্দ্রিয়ে না করি রোষ, ইঁহা-সবার কাহাঁ দোষ,
কৃষ্ণ-রূপাদির মহা আকর্ষণ ।
রূপাদি পাঁচ পাঁচে টানে, গেল ঘোড়ার পরাণে,
মোর দেহে না রহে জীবন ॥ ১৮॥

इन्द्रिये ना करि रोष, इँहा-सबार काहाँ दोष,
कृष्ण-रूपादिर महा आकर्षण ।
रूपादि पाँच पाँचे टाने, गेल घोड़ार पराणे,
मोर देहे ना रहे जीवन ॥ १८॥

इन्द्रिये—इन्द्रियों पर; **ना**—नहीं; **करि रोष**—मैं क्रोध कर सकती; **इँहा-सबार**—उन सबका; **काहाँ**—कहाँ; **दोष**—दोष; **कृष्ण-रूप-आदिर**—भगवान् कृष्ण के सौन्दर्य, शब्द, स्पर्श, सुगन्ध इत्यादि; **महा**—महान्; **आकर्षण**—आकर्षण; **रूप-आदि**—सौन्दर्य इत्यादि; **पाँच**—पाँच; **पाँचे**—पाँच इन्द्रियाँ; **टाने**—खींचती है; **गेल**—चली जाती है; **घोड़ार**—घोड़े का; **पराणे**—जीवन; **मोर**—मेरे; **देहे**—देह में; **ना**—नहीं; **रहे**—रहता; **जीवन**—जीवन।

अनुवाद

"हे सखी, यदि तुम कहो कि 'अपनी इन्द्रियों को वश में करने का प्रयास करो' तो मैं क्या कहूँ? मैं अपनी इन्द्रियों पर रुष्ट नहीं हो सकती। क्या यह उनका दोष है? कृष्ण का सौन्दर्य, शब्द, स्पर्श, सुगन्ध तथा स्वाद स्वभावतः अत्यधिक आकर्षक हैं। ये पाँचों गुण मेरी इन्द्रियों को आकृष्ट कर रहे हैं और इनमें से हर एक मेरे मन को अलग-अलग दिशा में खींच ले जाना चाहता है। इस प्रकार मेरे मन का प्राण महान् संकट में है, जिस तरह किसी घोड़े पर बैठकर पाँच दिशाओं में एक साथ जाने का प्रयास किया जाय। इस तरह मैं भी मृत्यु के संकट में हूँ।

कृष्ण-रूपामृत-सिन्धु, ताहार तरङ्ग-बिन्दु,
एक-बिन्दु जगज्डुबाय ।
त्रिजगते यत नारी, तार चित्त-उच्च-गिरि,
ताहा डुबाइ आगे उठि' धाय ॥ १९॥

कृष्ण-रूपामृत-सिन्धु, ताहार तरङ्ग-बिन्दु,
एक-बिन्दु जगत् डुबाय ।
त्रिजगते यत नारी, तार चित्त-उच्च-गिरि,
ताहा डुबाइ आगे उठि' धाय ॥ १९॥

कृष्ण-रूप—कृष्ण का दिव्य रूप; **अमृत-सिन्धु**—अमृत का महासागर; **ताहार**—उसका; **तरङ्ग-बिन्दु**—लहर का बिन्दु; **एक-बिन्दु**—एक बिन्दु; **जगत्**—सम्पूर्ण जगत्; **डुबाय**—आप्लावित हो सकता है; **त्रि-जगते**—तीनों लोकों में; **यत नारी**—सारी स्त्रियाँ; **तार चित्त**—उनकी चेतना; **उच्च-गिरि**—ऊँचे पर्वत; **ताहा**—वह; **डुबाइ**—डुबाकर; **आगे**—आगे; **उठि'**—उठकर; **धाय**—दौड़ती है।

अनुवाद

"तीनों लोकों में प्रत्येक स्त्री की चेतना निश्चित रूप से एक ऊँचे पर्वत की तरह है, किन्तु कृष्ण की सौन्दर्य-माधुरी समुद्र के तुल्य है। उस समुद्र की एक बूँद भी सम्पूर्ण जगत् को आप्लावित कर सकती है और चेतना के सारे ऊँचे पर्वतों को जलमग्न कर सकती है।

कृष्णेर वचन-माधुरी, नाना-रस-नर्म-धारी,
तार अन्याय कथन ना याय ।
जगतेर नारीर काणे, माधुरी-गुणे बान्धि' टाने,
टानाटानि काणेर प्राण याय ॥ २०॥

कृष्णेर वचन-माधुरी, नाना-रस-नर्म-धारी,
तार अन्याय कथन ना याय ।
जगतेर नारीर काणे, माधुरी-गुणे बान्धि' टाने,
टानाटानि काणेर प्राण याय ॥ २०॥

कृष्णेर—भगवान् कृष्ण के; **वचन-माधुरी**—वचनों की मधुरता; **नाना**—नाना; **रस-नर्म-धारी**—परिहास के शब्दों से पूर्ण; **तार**—उसके; **अन्याय**—अन्याय; **कथन**—वर्णन; **ना याय**—नहीं किया जा सकता; **जगतेर**—जगत् का; **नारीर**—स्त्रियों का; **काणे**—कान में;

माधुरी-गुणे—मधुरता का गुण; **बान्धि'**—बाँधकर; **टाने**—खींचता है; **टानाटानि**—खींचातानी; **काणेर**—कान का; **प्राण य्राय**—प्राण जाता है।

अनुवाद

"कृष्ण के परिहासपूर्ण वचनों की मधुरता सारी स्त्रियों के हृदयों का अवर्णनीय ध्वंस करती है। उनके शब्द स्त्रियों के कानों को उनके माधुर्य के साथ बाँध लेते हैं। इस तरह की खींचातानी के कारण कान का प्राण चला जाता है।

कृष्ण-अङ्ग सुशीतल, कि कहिमु तार बल,
छटाय जिने कोटीन्दु-चन्दन ।
सशैल नारीर वक्ष, ताहा आकर्षिते दक्ष,
आकर्षये नारी-गण-मन ॥२१॥

कृष्ण-अङ्ग सुशीतल, कि कहिमु तार बल,
छटाय जिने कोटीन्दु-चन्दन ।
सशैल नारीर वक्ष, ताहा आकर्षिते दक्ष,
आकर्षये नारी-गण-मन ॥ २१ ॥

कृष्ण-अङ्ग—कृष्ण का शरीर; **सु-शीतल**—अत्यन्त शीतल; **कि कहिमु**—मैं क्या कहूँ; **तार**—उसका; **बल**—बल; **छटाय**—किरणों से; **जिने**—मात करता है; **कोटि-इन्दु**—करोड़ों चन्द्रमाओं; **चन्दन**—चन्दन लेप; **स-शैल**—उन्नत पर्वतों जैसे; **नारीर**—स्त्रियों के; **वक्ष**—स्तनों को; **ताहा**—वह; **आकर्षिते**—आकृष्ट करने के लिए; **दक्ष**—अत्यन्त दक्ष; **आकर्षये**—आकृष्ट करता है; **नारी-गण-मन**—समस्त स्त्रियों के मनों को।

अनुवाद

"कृष्ण का दिव्य शरीर इतना शीतल है कि उसकी उपमा चन्दन-लेप से या करोड़ों चन्द्रमाओं से भी नहीं दी जा सकती। यह समस्त स्त्रियों के उन्नत पर्वतों जैसे स्तनों को दक्षतापूर्वक आकृष्ट करता है। निस्सन्देह, कृष्ण का दिव्य शरीर तीनों लोकों की समस्त स्त्रियों के मनों को आकृष्ट करता है।

कृष्णाङ्ग——सौरभ्य-भर, मृग-मद-मद-हर,
नीलोत्पलेर हरे गर्व-धन ।

জগত্নারীর নাসা, তার ভিতর পাতে বাসা,
নারী-গণে করে আকর্ষণ ॥২২॥

কৃষ্ণাঙ্গ—সৌরভ্য-ভর, মৃগ-মদ-মদ-হর,
নীলোৎপলের হরে গর্ব-ধন ।
জগত্ নারীর নাসা, তার ভিতর পাতে বাসা,
নারী-গণে করে আকর্ষণ ॥ ২২॥

कृष्ण-अङ्ग—कृष्ण के शरीर की; **सौरभ्य-भर**—सुगन्ध से परिपूर्ण; **मृग-मद**—कस्तूरी से; **मद-हर**—अधिक मादक; **नीलोत्पलेर**—नीलकमल; **हरे**—हर लेती है; **गर्व-धन**—गर्व रूपी धन को; **जगत्-नारीर**—समस्त जगत् की स्त्रियों के; **नासा**—नथुनों; **तार भितर**—के भीतर; **पाते वासा**—निवासस्थान बनाकर; **नारी-गणे**—स्त्रियाँ; **करे आकर्षण**—आकृष्ट करती है।

अनुवाद

"कृष्ण के शरीर की सुगन्ध कस्तूरी की सुगन्ध से भी अधिक मादक है और यह नीलकमल की सुगन्ध का भी अतिक्रमण करने वाली है। यह संसार की समस्त स्त्रियों के नथुनों में प्रवेश करती है और वहीं अपना निवासस्थान बनाकर उन्हें आकृष्ट करती रहती है।

কৃষ্ণের অধরামৃত, তাতে কর্পূর মন্দ-স্মিত,
স্ব-মাধুর্যে হরে নারীর মন ।
অন্যত্র ছাড়ায় লোভ, না পাইলে মনে ক্ষোভ,
ব্রজ-নারী-গণের মূল-ধন'' ॥২৩॥

কৃষ্ণের অধরামৃত, তাতে কর্পূর মন্দ-স্মিত,
স্ব-মাধুর্যে হরে নারীর মন ।
অন্যত্র ছাড়ায় লোভ, না পাইলে মনে ক্ষোভ,
ব্রজ-নারী-গণের মূল-ধন" ॥ ২৩॥

कृष्णेर—भगवान् कृष्ण के; **अधर-अमृत**—होठों की मधुरता; **ताते**—उसके साथ; **कर्पूर**—कपूर; **मन्द-स्मित**—मन्द हास; **स्व-माधुर्ये**—उनकी मधुरता से; **हरे**—आकृष्ट करते हैं; **नारीर मन**—समस्त स्त्रियों के मन; **अन्यत्र**—अन्य कहीं; **छाड़ाय**—नष्ट कर देते हैं; **लोभ**—लोभ; **ना पाइले**—नहीं मिल पाती; **मने**—मन में; **क्षोभ**—बड़ा क्षोभ; **व्रज-नारी-गणेर**—वृन्दावन की सभी गोपियों का; **मूल-धन**—धन।

अनुवाद

"कृष्ण के होंठ इतने मधुर हैं कि जब उनमें उनके मन्द हास का कपूर मिल जाता है, तब वे समस्त स्त्रियों के मनों को आकृष्ट करते हैं और उन्हें बाध्य कर देते हैं कि वे अन्य सारे आकर्षणों का परित्याग कर दें। यदि कृष्ण की मन्दहास रूपी मधुरता नहीं मिल पाती, तो इससे महान् मानसिक कठिनाइयाँ तथा शोक उत्पन्न होता है। यह मधुरता ही वृन्दावन की गोपियों का एकमात्र धन है।"

এত কহি' গৌরহরি, দুই-জনার কণ্ঠ ধরি',
কহে,—'শুন, স্বরূপ-রামরায় ।
কাহাঁ করোঁ, কাহাঁ যাঙ, কাহাঁ গেলে কৃষ্ণ পাঙ,
দুঁহে মোরে কহ সে উপায়' ॥২৪॥

एत कहि' गौरहरि, दुइ-जनार कण्ठ धरि',
कहे,—'शुन, स्वरूप-रामराय ।
काहाँ करों, काहाँ याङ; काहाँ गेले कृष्ण पाङ;
दुँहे मोरे कह से उपाय' ॥ २४॥

एत कहि'—यह कहकर; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **दुइ-जनार**—दोनों के; **कण्ठ धरि'**—गले लगकर; **कहे**—कहा; **शुन**—कृपया सुनो; **स्वरूप-राम-राय**—स्वरूप दामोदर तथा रामानन्द राय; **काहाँ करों**—मैं क्या करूँ; **काहाँ याङ**—मैं कहाँ जाऊँ; **काहाँ गेले**—कहाँ गये; **कृष्ण पाङ**—मैं कृष्ण को पा सकुँ; **दुँहे**—तुम दोनों; **मोरे**—मुझे; **कह**—कहो; **से उपाय**—ऐसा उपाय।

अनुवाद

इस तरह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने रामानन्द राय तथा स्वरूप दामोदर के गले लग गये। फिर महाप्रभु ने कहा, "हे मित्रों, कृपया मेरी बात सुनो। मैं क्या करूँ? मैं कहाँ जाऊँ? कृष्ण को पाने के लिए कहाँ जा सकता हूँ? तुम दोनों मुझे बताओ कि मैं उनको कैसे पा सकता हूँ।"

এই-মত গৌর-প্রভু প্রতি দিনে-দিনে ।
বিলাপ করেন স্বরূপ-রামানন্দ-সনে ॥২৫॥

एइ-मत गौर-प्रभु प्रति दिने-दिने ।
विलाप करेन स्वरूप-रामानन्द-सने ॥ २५ ॥

एइ-मत—इस तरह; **गौर-प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रति दिने-दिने**—प्रति दिन; **विलाप करेन**—विलाप करते; **स्वरूप-रामानन्द-सने**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी और रामानन्द राय के संग में।

अनुवाद

इस तरह दिव्य पीड़ा में निमग्न श्री चैतन्य महाप्रभु दिन प्रति दिन स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय की गोष्ठी में विलाप करते।

সেই দুই-জন প্রভুরে করে আশ্বাসন ।
স্বরূপ গায়, রায় করে শ্লোক পঠন ॥২৬॥
सेइ दुइ-जन प्रभुरे करे आश्वासन ।
स्वरूप गाय, राय करे श्लोक पठन ॥ २६ ॥

सेइ—वे; **दुइ-जन**—दोनों जन; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **करे**—करते; **आश्वासन**—आश्वस्त; **स्वरूप गाय**—स्वरूप दामोदर गाते; **राय**—रामानन्द राय; **करे**—करते; **श्लोक पठन**—श्लोकों का पठन।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी उपयुक्त गीत गाते और रामानन्द राय उपयुक्त श्लोक सुनाते, जिससे महाप्रभु का आनन्द वर्धित होता रहे। इस तरह वे उन्हें सान्त्वना दे पाते।

কর্ণামৃত, বিদ্যাপতি, শ্রী-গীত-গোবিন্দ ।
ইহার শ্লোক-গীতে প্রভুর করায় আনন্দ ॥২৭॥
कर्णामृत, विद्यापति, श्री-गीत-गोविन्द ।
इहार श्लोक-गीते प्रभुर कराय आनन्द ॥ २७ ॥

कर्णामृत—*कर्णामृत* नामक ग्रन्थ; **विद्यापति**—विद्यापति नामक ग्रन्थकार; **श्री-गीत-गोविन्द**—जयदेव गोस्वामी कृत *श्री गीत गोविन्द* ग्रन्थ; **इहार**—इनके; **श्लोक-गीते**—श्लोक और गीत; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **कराय**—करते; **आनन्द**—आनन्दित।

अनुवाद

महाप्रभु बिल्वमंगल ठाकुर कृत कृष्णकर्णामृत, विद्यापति की कविता तथा जयदेव गोस्वामी कृत श्री गीतगोविन्द को विशेष रूप से सुनना पसन्द करते थे। जब श्री चैतन्य महाप्रभु के साथी इन पुस्तकों से श्लोक सुनाते और गीत गाते, तब महाप्रभु अत्यधिक आनन्दित होते।

एक-दिन महाप्रभु समुद्र-तीरे याइते ।
पुष्पेर उद्यान तथा देखेन आचम्बिते ॥२८॥

एक-दिन महाप्रभु समुद्र-तीरे याइते ।
पुष्पेर उद्यान तथा देखेन आचम्बिते ॥ २८ ॥

एक-दिन—एक दिन; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **समुद्र-तीरे**—समुद्र के किनारे; **याइते**—जाते समय; **पुष्पेर उद्यान**—पुष्पवाटिका; **तथा**—वहाँ; **देखेन**—देखी; **आचम्बिते**—अचानक।

अनुवाद

एक दिन समुद्र के किनारे जाते समय श्री चैतन्य महाप्रभु ने अचानक एक पुष्पवाटिका देखी।

वृन्दावन-भ्रमे ताहाँ पशिला धाञा ।
प्रेमावेशे बुले ताहाँ कृष्ण अन्वेषिया ॥२९॥

वृन्दावन-भ्रमे ताहाँ पशिला धाञा ।
प्रेमावेशे बुले ताहाँ कृष्ण अन्वेषिया ॥ २९ ॥

वृन्दावन-भ्रमे—उसे वृन्दावन समझकर; **ताहाँ**—वहाँ; **पशिला**—प्रवेश किया; **धाञा**—भागकर; **प्रेम-आवेशे**—कृष्ण के प्रेम में मग्न होकर; **बुले**—घूमते; **ताहाँ**—वहाँ; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **अन्वेषिया**—को खोजते हुए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस पुष्पवाटिका को वृन्दावन समझ लिया और वे तेजी से उसमें प्रवेश कर गये। कृष्ण-प्रेम में मग्न होकर वे पुष्पवाटिका में घूमते रहे और कृष्ण को खोजते रहे।

रासे राधा लञा कृष्ण अन्तर्धान कैला ।
पाछे सखी-गण यैछे चाहि' बेड़ाइला ॥ ३० ॥

रासे राधा लञा कृष्ण अन्तर्धान कैला ।
पाछे सखी-गण यैछे चाहि' बेड़ाइला ॥ ३० ॥

रासे—रास नृत्य में; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **लञा**—लेकर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **अन्तर्धान कैला**—अदृश्य हो गये; **पाछे**—फिर से; **सखी-गण**—सारी गोपियाँ; **यैछे**—ऐसे ही; **चाहि'**—देखकर; **बेड़ाइला**—घूमते रहे।

अनुवाद

जब रास नृत्य के समय कृष्ण राधारानी को लेकर अदृश्य हो गये, तब गोपियाँ उन्हें ढूँढ़ती हुईं जंगल में घूमने लगीं। उसी तरह श्री चैतन्य महाप्रभु उस पुष्पवाटिका में घूमते रहे।

सेई भावावेशे प्रभु प्रति-तरु-लता ।
श्लोक पड़ि' पड़ि' चाहि' बुले यथा तथा ॥ ३१ ॥

सेइ भावावेशे प्रभु प्रति-तरु-लता ।
श्लोक पड़ि' पड़ि' चाहि' बुले यथा तथा ॥ ३१ ॥

सेइ—वह; **भाव-आवेशे**—भाव में मग्न होकर; **प्रभु**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु; **प्रति-तरु-लता**—हर वृक्ष और लता; **श्लोक पड़ि' पड़ि'**—श्लोक सुना सुनाकर; **चाहि'**—पूछते हुए; **बुले**—घूमने लगे; **यथा तथा**—यहाँ और वहाँ।

अनुवाद

गोपियों के भाव में मग्न होकर श्री चैतन्य महाप्रभु इधर-उधर घूमने लगे। वे सारे वृक्षों तथा लताओं से श्लोक सुना सुनाकर कृष्ण के विषय में पूछने लगे।

तात्पर्य

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने *श्रीमद्भागवत* से निम्नलिखित तीन श्लोक उद्धृत किये (१०.३०.९, ७, ८)।

चूत-प्रियाल-पनसासन-कोविदार-
जम्ब्वर्क-बिल्व-बकुलाम्र-कदम्ब-नीपाः ।

येऽन्ये परार्थ-भवका यमुनोपकूलाः
शंसन्तु कृष्ण-पदवीं रहितात्मनां नः ॥ ३२॥

चूत-प्रियाल-पनसासन-कोविदार-
जम्ब्वर्क-बिल्व-बकुलाम्र-कदम्ब-नीपाः ।
येऽन्ये परार्थ-भवका यमुनोपकूलाः
शंसन्तु कृष्ण-पदवीं रहितात्मनां नः ॥ ३२ ॥

चूत—हे चूत वृक्ष (आम का एक प्रकार); **प्रियाल**—हे प्रियाल वृक्ष; **पनस**—हे पनस वृक्ष; **आसन**—हे आसन वृक्ष; **कोविदार**—हे कोविदार वृक्ष; **जम्बु**—हे जम्बु वृक्ष; **अर्क**—हे अर्क वृक्ष; **बिल्व**—हे बेल फल के वृक्ष; **बकुल**—हे बकुल वृक्ष; **आम्र**—हे आम वृक्ष; **कदम्ब**—हे कदम्ब वृक्ष; **नीपाः**—हे नीप वृक्ष; **ये**—जो; **अन्ये**—अन्य; **पर-अर्थ-भवकाः**—अन्यों के लिए अत्यन्त लाभदायी; **यमुना-उपकूलाः**—यमुना के तट पर; **शंसन्तु**—कृपया कहो; **कृष्ण-पदवीम्**—कृष्ण कहाँ गये; **रहित-आत्मनाम्**—जो अपना मन खो चुकी हैं; **नः**—हम।

अनुवाद

"[गोपियों ने कहा :], 'हे चूत वृक्ष, प्रियाल, पनस, आसन तथा कोविदार वृक्षों, हे जंबु वृक्ष, हे अर्क वृक्ष, हे बेल, बकुल तथा आम, हे कदम्ब, हे नीप तथा अन्यों का कल्याण करने वाले यमुना तट पर खड़े अन्य वृक्षों, कृपा करके हमें बता दो कि कृष्ण कहाँ गये हैं? हम अपने मन को खो चुकी हैं और मृतप्राय हैं।

कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविन्द-चरण-प्रिये ।
सह त्वालि-कुलैर्बिभ्द्दृष्टस्तेऽति-प्रियोऽच्युतः ॥ ३३॥
कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविन्द-चरण-प्रिये ।
सह त्वालि-कुलैर्बिभ्रद्दृष्टस्तेऽति-प्रियोऽच्युतः ॥ ३३ ॥

कच्चित्—या; **तुलसि**—हे तुलसी वृक्ष; **कल्याणि**—सर्वमंगलकारी; **गोविन्द-चरण**—गोविन्द के चरणकमलों को; **प्रिये**—अत्यन्त प्रिय; **सह**—साथ; **त्वा**—तुमने; **अलि-कुलैः**—भौरों के झुंड से; **बिभ्रत्**—युक्त; **दृष्टः**—देखा हुआ; **ते**—तुमने; **अति-प्रियः**—अत्यन्त प्रिय; **अच्युतः**—भगवान् कृष्ण।

अनुवाद

"'हे सर्वमंगल तुलसी वृक्ष, तुम गोविन्द के चरणकमलों को अत्यन्त

प्रिय हो और वे तुम्हें अत्यन्त प्रिय हैं। क्या तुमने अपने पत्रों की माला पहने और भौरों के झुंड से घिरे कृष्ण को यहाँ जाते हुए देखा है?

मालत्यदर्शि वः कच्चिन्मल्लिके जाति यूथिके ।
प्रीतिं वो जनयन् यातः कर-स्पर्शेन माधवः ॥ ३४॥

मालत्यदर्शि वः कच्चिन्मल्लिके जाति यूथिके ।
प्रीतिं वो जनयन् यातः कर-स्पर्शेन माधवः ॥ ३४॥

मालति—हे मालती पुष्पों के वृक्ष; **अदर्शि**—देखा हुआ; **वः**—तुमने; **कच्चित्**—क्या; **मल्लिके**—हे मल्लिका फूलों के वृक्ष; **जाति**—हे जाति फूलों के वृक्ष; **यूथिके**—हे यूथिका फूलों के वृक्ष; **प्रीतिम्**—आनन्दित करने; **वः**—तुम्हारा; **जनयन्**—करने; **यातः**—इधर से जाते; **कर-स्पर्शेन**—अपने हाथों से स्पर्श करते; **माधवः**—श्रीकृष्ण।

अनुवाद

"'हे मालती, मल्लिका, जाती तथा यूथिका पुष्पों के वृक्षों, क्या तुमने कृष्ण को अपने हाथों से तुम्हें आनन्दित करने के लिए तुम्हारा स्पर्श करते हुए इधर से जाते देखा है?'"

आम्र, पनस, पियाल, जम्बु, कोविदार ।
तीर्थ-वासी सबे, कर पर-उपकार ॥ ३५॥

आम्र, पनस, पियाल, जम्बु, कोविदार ।
तीर्थ-वासी सबे, कर पर-उपकार ॥ ३५॥

आम्र—हे आम के वृक्ष; **पनस**—हे पनस वृक्ष; **पियाल**—हे पियाल वृक्ष; **जम्बु**—हे जम्बु वृक्ष; **कोविदार**—हे कोविदार वृक्ष; **तीर्थ-वासी**—तीर्थ स्थान के निवासी; **सबे**—सब; **कर**—कृपया करो; **पर-उपकार**—अन्यों का कल्याण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "'हे आम के वृक्ष, हे कटहल के वृक्ष, हे पियाल, जम्बु तथा कोविदार वृक्षों, तुम सभी तीर्थ स्थान के निवासी हो। इसलिए तुम कृपया अन्यों के कल्याण हेतु कार्य करो।

কৃষ্ণ তোমার ইহাঁ আইলা, পাইলা দরশন? ।
কৃষ্ণের উদ্দেশ কহি' রাখহ জীবন ॥৩৬॥

কৃষ্ণ তোমার ইহাঁ আইলা, পাইলা দরশন? ।
কৃষ্ণের উদ্দেশ কহি' রাখহ জীবন ॥ ৩৬ ॥

কৃষ্ণ—भगवान् कृष्ण; **তোমার**—तुम्हारे; **ইহাঁ**—यहाँ; **আইলা**—आये; **পাইলা দরশন**—तुमने देखा; **কৃষ্ণের**—भगवान् कृष्ण के; **উদ্দেশ**—किस दिशा से; **কহি'**—कहो; **রাখহ জীবন**—हमारे प्राण बचा लो।

अनुवाद

"'क्या तुमने कृष्ण को इधर आते देखा है? कृपा करके हमें बतला दो कि वे किधर से गये हैं और हमारे प्राण बचा लो।'"

উত্তর না পাঞা পুনঃ করে অনুমান ।
এই সব—পুরুষ-জাতি, কৃষ্ণের সখার সমান ॥৩৭॥

উত্তর না পাঞা পুনঃ করে অনুমান ।
এই সব—পুরুষ-জাতি, কৃষ্ণের সখার সমান ॥ ৩৭ ॥

উত্তর—उत्तर; **না**—नहीं; **পাঞা**—पाया; **পুনঃ**—पुनः; **করে**—किया; **অনুমান**—अनुमान; **এই সব**—ये सब; **পুরুষ-জাতি**—पुरुष जाति; **কৃষ্ণের**—कृष्ण के; **সখার সমান**—अच्छे मित्र।

अनुवाद

"जब वृक्षों ने उत्तर नहीं दिया, तो गोपियों ने अनुमान लगाया, "'चूँकि ये सारे वृक्ष पुरुष जाति के हैं, अतएव अवश्य ही ये कृष्ण के मित्र होंगे।

এ কেনে কহিবে কৃষ্ণের উদ্দেশ আমায়? ।
এ—স্ত্রী-জাতি লতা, আমার সখী-প্রায় ॥৩৮॥

এ কেনে কহিবে কৃষ্ণের উদ্দেশ আমায়? ।
এ—স্ত্রী-জাতি লতা, আমার সখী-প্রায় ॥ ৩৮ ॥

এ—ये; **কেনে**—क्यों; **কহিবে**—कहेंगे; **কৃষ্ণের**—भगवान् कृष्ण की; **উদ্দেশ**—दिशा की

ओर; **आमाय**—हमें; **ए**—ये; **स्त्री-जाति**—स्त्री जाति की; **लता**—लता; **आमार**—हमारी; **सखी-प्राय**—सखियों जैसी।

अनुवाद

"'भला ये वृक्ष हमें क्यों बताने लगे कि कृष्ण कहाँ गये हैं? चलो इन लताओं से क्यों न पूछें; ये स्त्री जाति की हैं और ये हमारी सखियों जैसी हैं।

अवश्य कहिबे,—पाञाछे कृष्णेर दर्शने ।
एत अनुमानि' पुछे तुलस्यादि-गणे ॥ ३९ ॥

अवश्य कहिबे,—पाञाछे कृष्णेर दर्शने ।
एत अनुमानि' पुछे तुलस्यादि-गणे ॥ ३९ ॥

अवश्य—अवश्य; **कहिबे**—बतलायेंगी; **पाञाछे**—उन्होंने पाया है; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **दर्शने**—दर्शन; **एत**—यह; **अनुमानि'**—अुनमान लगाकर; **पुछे**—पूछा; **तुलसी-आदि-गणे**—तुलसी आदि वृक्षों तथा लताओं से।

अनुवाद

"'ये हमें अवश्य बतलायेंगी कि कृष्ण कहाँ गये हैं, क्योंकि उन्हें इन्होंने स्वयं देखा है।'" इस तरह अनुमान लगाते हुए गोपियों ने तुलसी आदि वृक्षों तथा लताओं से पूछा।

"तुलसि, मालति, यूथि, माधवि, मल्लिके ।
तोमार प्रिय कृष्ण आइला तोमार अन्तिके? ॥ ४० ॥

"तुलसि, मालति, यूथि, माधवि, मल्लिके ।
तोमार प्रिय कृष्ण आइला तोमार अन्तिके? ॥ ४० ॥

तुलसि—हे तुलसी; **मालति**—हे मालती; **यूथि**—हे यूथी; **माधवि**—हे माधवी; **मल्लिके**—हे मल्लिका; **तोमार**—तुम्हारे; **प्रिय**—अत्यन्त प्रिय; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **आइला**—आये; **तोमार अन्तिके**—तुम्हारे पास।

अनुवाद

"'हे तुलसी! हे मालती! हे यूथी, माधवी तथा मल्लिका! तुम सबों को कृष्ण अत्यन्त प्रिय हैं, अतएव वे तुम्हारे पास अवश्य आये होंगे।

তুমি-সব—হও আমার সখীর সমান ।
কৃষ্ণোদ্দেশ কহি' সবে রাখহ পরাণ'' ॥ ৪১ ॥

तुमि-सब—हओ आमार सखीर समान ।
कृष्णोद्देश कहि' सबे राखह पराण" ॥ ४१ ॥

तुमि-सब—तुम सभी; **हओ**—हो; **आमार**—हमारी; **सखीर**—सखियों के; **समान**—समान; **कृष्ण-उद्देश**—कृष्ण किधर गये; **कहि'**—कहो; **सबे**—तुम सब; **राखह पराण**—हमारे प्राणों की रक्षा करो।

अनुवाद

"'तुम सभी हमारी सखियों के समान हो। कृपा करके हमें बताओ कि कृष्ण किधर गये हैं और हमारे प्राणों की रक्षा करो।'"

উত্তর না পাঞা পুনঃ ভাবেন অন্তরে ।
'এহ—কৃষ্ণ-দাসী, ভয়ে না কহে আমারে' ॥ ৪২ ॥

उत्तर ना पाञा पुनः भावेन अन्तरे ।
'एह—कृष्ण-दासी, भये ना कहे आमारे' ॥ ४२ ॥

उत्तर—उत्तर; **ना**—नहीं; **पाञा**—पाकर; **पुनः**—पुनः; **भावेन**—सोचा; **अन्तरे**—मन में; **एह**—ये; **कृष्ण-दासी**—कृष्ण की दासियाँ; **भये**—भयवश; **ना कहे**—नहीं कहेंगी; **आमारे**—हमें।

अनुवाद

इतने पर भी जब उन्हें उत्तर नहीं मिला, तो गोपियों ने सोचा, "'ये सारी लताएँ कृष्ण की दासियाँ हैं और भयवश ये हमें नहीं बतलायेंगी।'"

আগে মৃগী-গণ দেখি' কৃষ্ণাঙ্গ-গন্ধ পাঞা ।
তার মুখ দেখি' পুছেন নির্ণয় করিয়া ॥ ৪৩ ॥

आगे मृगी-गण देखि' कृष्णाङ्ग-गन्ध पाञा ।
तार मुख देखि' पुछेन निर्णय करिया ॥ ४३ ॥

आगे—आगे; **मृगी-गण**—मृगियों; **देखि'**—देखकर; **कृष्ण-अङ्ग-गन्ध**—कृष्ण के शरीर की सुगन्ध; **पाञा**—पाकर; **तार मुख**—मृगियों के मुखों को; **देखि'**—देखकर; **पुछेन**—पूछा; **निर्णय करिया**—निश्चित किया।

अनुवाद

"तब गोपियों ने मृगियों को देखा। कृष्ण के शरीर की सुगन्ध पाकर तथा मृगियों के मुखों को देखकर, गोपियों ने यह निश्चित करने के लिए कि क्या कृष्ण पास में ही हैं, उनसे पूछा।

अप्येण-पत्न्युपगतः प्रिययेह गात्रैस्
तन्वन्दृशां सखि सु-निर्वृतिमच्युतो वः ।
कान्ताङ्ग-सङ्ग-कुच-कुङ्कुम-रञ्जितायाः
कुन्द-स्रजः कुल-पतेरिह वाति गन्धः ॥ ४४ ॥

अप्येण-पत्न्युपगतः प्रिययेह गात्रैस्
तन्वन्दृशां सखि सु-निर्वृतिमच्युतो वः ।
कान्ताङ्ग-सङ्ग-कुच-कुङ्कुम-रञ्जितायाः
कुन्द-स्रजः कुल-पतेरिह वाति गन्धः ॥ ४४ ॥

अपि—क्या; **एण-पत्नि**—हे मृगी; **उपगतः**—आये हैं; **प्रियया**—अपनी प्रेयसी के साथ; **इह**—यहाँ; **गात्रैः**—अपने अंगों के द्वारा; **तन्वन्**—वर्धित करते हुए; **दृशाम्**—अपनी आँखों से ; **सखि**—हे प्रिय सखी; **सु-निर्वृतिम्**—आनन्दित; **अच्युतः**—कृष्ण; **वः**—तुम सबों ने; **कान्ता-अङ्ग**—प्रिया के अंग; **सङ्ग**—का संग; **कुच-कुङ्कुम**—स्तनों पर लगा कुंकुम चूर्ण; **रञ्जितायाः**—रंजित; **कुन्द-स्रजः**—कुन्द फूलों की माला; **कुल-पतेः**—कृष्ण के; **इह**—यहाँ; **वाति**—बहना; **गन्धः**—सुगन्ध।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "'हे मृगी, भगवान् कृष्ण अपनी प्रेयसी का आलिंगन कर रहे थे, जिससे उसके उठे हुए स्तनों पर लगा कुंकुम कुन्द फूलों की उनकी माला पर चिपक गया है। उस माला की सुगन्ध यहाँ बह रही है। हे प्रिय सखी, क्या तुमने कृष्ण को अपनी सर्वप्रिय संगिनी के साथ इस ओर से जाते और तुम सबों की आँखों के आनन्द को वर्धित करते देखा है?'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.३०.११) से उद्धृत है।

"कह, मृगि, राधा-सह श्री-कृष्ण सर्वथा ।
तोमाय़ सुख दिते आइला? नाहिक अन्यथा ॥ ४५ ॥

"कह, मृगि, राधा-सह श्री-कृष्ण सर्वथा ।
तोमाय सुख दिते आइला? नाहिक अन्यथा ॥ ४५ ॥

कह—कृपया कहो; **मृगि**—हे मृगी; **राधा-सह**—श्रीमती राधारानी के संग; **श्री-कृष्ण**—भगवान् श्रीकृष्ण; **सर्वथा**—सर्व प्रकार से; **तोमाय**—तुम्हें; **सुख दिते**—आनन्दित करने के लिए; **आइला**—आये होंगे; **नाहिक अन्यथा**—अवश्य ही।

अनुवाद

"'हे मृगी, श्रीकृष्ण तुम्हें आनन्दित करने में सदैव प्रसन्न रहते हैं। कृपा करके हमें बताओ कि क्या वे श्रीमती राधारानी के साथ इधर से निकले हैं? हम सोचती हैं कि वे अवश्य ही इधर आये होंगे।

राधा-प्रिय़-सखी आमरा, नहि बहिरङ्ग ।
दूर हैते जानि तार य़ैछे अङ्ग-गन्ध ॥ ४६ ॥
राधा-प्रिय-सखी आमरा, नहि बहिरङ्ग ।
दूर हैते जानि तार य़ैछे अङ्ग-गन्ध ॥ ४६ ॥

राधा—श्रीमती राधारानी की; **प्रिय-सखी**—प्रिय सखियाँ; **आमरा**—हम; **नहि बहिरङ्ग**—बाहरी नहीं हैं; **दूर हैते**—दूर से ही; **जानि**—हम जानती हैं; **तार**—भगवान् कृष्ण के; **य़ैछे**—जैसे; **अङ्ग-गन्ध**—शारीरिक गन्ध को।

अनुवाद

"'हम कोई बाहरी स्त्रियाँ नहीं हैं। श्रीमती राधारानी की प्रिय सखियाँ होने के कारण हम दूर से ही कृष्ण की शारीरिक गन्ध को जान सकती हैं।

राधा-अङ्ग-सङ्गे कुच-कुङ्कुम-भूषित ।
कृष्ण-कुन्द-माला-गन्धे वाय़ु—सुवासित ॥ ४७ ॥
राधा-अङ्ग-सङ्गे कुच-कुङ्कुम-भूषित ।
कृष्ण-कुन्द-माला-गन्धे वायु—सुवासित ॥ ४७ ॥

राधा-अङ्ग—श्रीमती राधारानी का शरीर; **सङ्गे**—आलिंगन से; **कुच-कुङ्कुम**—वक्षस्थलों में लगा कुंकुम चूर्ण; **भूषित**—सुशोभित; **कृष्ण**—भगवान् श्रीकृष्ण को; **कुन्द-माला**—कुन्द की फुलों की माला की; **गन्धे**—सुगन्ध; **वायु**—वायु को; **सु-वासित**—सुवासित।

अनुवाद

"'कृष्ण द्वारा श्रीमती राधा का आलिंगन करने से उनके वक्षस्थलों में लगा कुंकुम चूर्ण कृष्ण के शरीर को सुशोभित करने वाली कुन्द-माला में लग गया है। उस माला की सुगन्ध ने पूरे वायुमण्डल को सुगन्धित बना दिया है।

কৃষ্ণ ইহাঁ ছাড়ি' গেলা, ইহোঁ—বিরহিণী ।
কিবা উত্তর দিবে এই—না শুনে কাহিনী'' ॥৪৮॥

কৃষ্ণ ইহাঁ ছাড়ি' গেলা, ইহোঁ—বিরহিণী ।
কিবা উত্তর দিবে এই—না শুনে কাহিনী" ॥ ৪৮ ॥

কৃষ্ণ—भगवान् कृष्ण; **इहाँ**—यहाँ; **छाड़ि' गेला**—छोड़ दिया; **इहों**—मृगी; **विरहिणी**—विरह का अनुभव करते हुए; **किबा**—क्या; **उत्तर**—उत्तर; **दिबे**—उन्होंने दिया; **एइ**—ये; **ना शुने**—नहीं सुनो; **काहिनी**—हमारे शब्द।

अनुवाद

"'भगवान् कृष्ण ने यह स्थान छोड़ दिया है, इसीलिए मृगियाँ विरह का अनुभव कर रही हैं। वे हमारे शब्द नहीं सुन रहीं, अतएव वे उत्तर दें तो कैसे दें?'"

আগে বৃক্ষ-গণ দেখে পুষ্প-ফল-ভরে ।
শাখা সব পড়িয়াছে পৃথিবী-উপরে ॥৪৯॥

আগে বৃক্ষ-গণ দেখে পুষ্প-ফল-ভরে ।
শাখা সব পড়িয়াছে পৃথিবী-উপরে ॥ ৪৯ ॥

आगे—आगे; **वृक्ष-गण**—वृक्ष; **देखे**—देखे; **पुष्प-फल-भरे**—फूलों और फलों से लदी होने के कारण; **शाखा सब**—सभी शाखाएँ; **पड़ियाछे**—झुक गईं; **पृथिवी-उपरे**—पृथ्वी पर।

अनुवाद

"तब गोपियाँ अनेक वृक्षों के पास आईं, जिनकी शाखाएँ फलों तथा फूलों से लदी होने के कारण भूमि पर झुक गईं थीं।

कृष्णे देखि' एइ सब करेन नमस्कार ।
कृष्ण-गमन पुछे तारे करिया निर्धार ॥५०॥

कृष्णे देखि' एइ सब करेन नमस्कार ।
कृष्ण-गमन पुछे तारे करिया निर्धार ॥५०॥

कृष्णे देखि'—कृष्ण को देखकर; **एइ**—ये; **सब**—सब; **करेन नमस्कार**—सादर नमस्कार करते हुए; **कृष्ण-गमन**—कृष्ण को जाते हुए; **पुछे**—पूछा; **तारे**—उनसे; **करिया निर्धार**—निश्चित करने के लिए।

अनुवाद

"गोपियों ने सोचा कि चूँकि इन सारे वृक्षों ने कृष्ण को अपने पास से जाते हुए देखा होगा, इसलिए वे उन्हें सादर नमस्कार कर रहे हैं। निश्चित करने के उद्देश्य से उन्होंने वृक्षों से पूछा।

बाहुं प्रिया उपधाय गृहीत-पद्मो
रामानुजस्तुलसिकालि-कुलैर्मदान्धैः ।
अन्वीयमान इह वस्तरवः प्रणामं
किं वाभिनन्दति चरन्प्रणयावलोकैः ॥५१॥

बाहुं प्रियांस उपधाय गृहीत-पद्मो
रामानुजस्तुलसिकालि-कुलैर्मदान्धैः ।
अन्वीयमान इह वस्तरवः प्रणामं
किं वाभिनन्दति चरन्प्रणयावलोकैः ॥५१॥

बाहुम्—बाहु; **प्रिया-अंसे**—अपनी प्रेयसी के कन्धे पर; **उपधाय**—रखकर; **गृहीत**—पकड़े हुए; **पद्मः**—कमल फूल; **राम-अनुजः**—बलराम के छोटे भाई (कृष्ण); **तुलसिका**—तुसली के फुलों की माला के कारण; **अलि-कुलैः**—भौरों से; **मद-अन्धैः**—सुगन्ध से अन्धे; **अन्वीयमानः**—पीछा किये जाते; **इह**—यहाँ; **वः**—तुम्हारे; **तरवः**—हे वृक्षों; **प्रणामम्**—प्रणाम; **किम् वा**—अथवा; **अभिनन्दति**—स्वागत किया; **चरन्**—जाते हुए; **प्रणय-अवलोकैः**—प्रेममयी चितवन से।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "'हे वृक्षों, कृपा करके हमें बतलाओ कि क्या बलराम के छोटे भाई कृष्ण ने इधर से जाते हुए, श्रीमती राधारानी के कन्धे पर अपना एक हाथ रखे तथा दूसरे हाथ में कमल लिए हुए तथा तुलसी दलों की सुगन्ध से उन्मत्त भौरों के दल से पीछा किये जाते हुए, तुम्हारे प्रणाम का स्वागत प्रेममयी चितवन से किया है?'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.३०.१२) से लिया गया है।

प्रिया-मुखे भृङ्ग पड़े, ताहा निवारिते ।
लीला-पद्म चालाइते हैल अन्य-चित्ते ॥५२॥

प्रिया-मुखे भृङ्ग पड़े, ताहा निवारिते ।
लीला-पद्म चालाइते हैल अन्य-चित्ते ॥५२॥

प्रिया-मुखे—प्रिया के मुख पर; **भृङ्ग**—भौरों को; **पड़े**—बैठने से; **ताहा**—वह; **निवारिते**—रोकने के लिए; **लीला**—लीला; **पद्म**—कमल पुष्प; **चालाइते**—चलायमान; **हैल**—था; **अन्य-चित्ते**—मन विचलित हुआ।

अनुवाद

"'अपनी प्रिया के मुख पर भौरों को बैठने से रोकने के लिए उन्होंने अपने हाथ में लिए कमलफूल से उन्हें भगा दिया और इस तरह उनका मन कुछ चलायमान हुआ।

तोमार प्रणामे कि कैराछेन अवधान? ।
किवा नाहि करेन, कह वचन-प्रमाण ॥५३॥

तोमार प्रणामे कि कैराछेन अवधान? ।
किबा नाहि करेन, कह वचन-प्रमाण ॥५३॥

तोमार—तुमने; **प्रणामे**—नमस्कार किया; **कि**—क्या; **कैराछेन**—दिया है; **अवधान**—ध्यान; **किबा**—या; **नाहि करेन**—नहीं दिया; **कह**—कृपया बोलो; **वचन**—शब्द; **प्रमाण**—साक्ष्य।

अनुवाद

"'जब तुम लोगों ने उन्हें नमस्कार किया, तो उन्होंने उस पर ध्यान दिया कि नहीं? कृपा करके अपने शब्दों के लिए साक्ष्य दो।

কৃষ্ণের বিয়োগে এই সেবক দুঃখিত ।
কিবা উত্তর দিবে? ইহার নাহিক সম্বিৎ'' ॥৫৪॥

কৃষ্ণের বিয়োগে এই সেবক দুঃখিত ।
কিবা উত্তর দিবে? ইহার নাহিক সম্বিত্" ॥৫৪॥

কৃষ্ণের বিয়োগে—कृष्ण के वियोग से; **এই**—ये; **সেবক**—सेवक; **দুঃখিত**—अत्यन्त दुःखी; **কিবা**—क्या; **উত্তর**—उत्तर; **দিবে**—वे देंगे; **ইহার**—इनकी; **নাহিক**—नहीं है; **সম্বিত্**—चेतना।

अनुवाद

"'कृष्ण के वियोग ने इन सेवकों को अत्यन्त दुःखी बना दिया है। अपनी चेतना खोकर भला ये हमें किस तरह उत्तर दे सकते हैं?'"

এত বলি' আগে চলে যমুনার কূলে ।
দেখে,—তাহাঁ কৃষ্ণ হয় কদম্বের তলে ॥৫৫॥

এত বলি' আগে চলে য়মুনার কূলে ।
দেখে,—তাহাঁ কৃষ্ণ হয় কদম্বের তলে ॥৫৫॥

এত বলি'—यह कहकर; **আগে চলে**—अग्रसर हुई; **য়মুনার কূলে**—यमुना नदी के तट की ओर; **দেখে**—उन्होंने देखा; **তাহাঁ**—वहाँ; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण; **হয়**—उपस्थित हैं; **কদম্বের তলে**—कदम्ब वृक्ष के नीचे।

अनुवाद

यह कहकर गोपियाँ यमुना नदी के तट की ओर अग्रसर हुईं। वहाँ पर उन्होंने कृष्ण को एक कदम्ब वृक्ष के नीचे देखा।

কোটি-মন্মথ-মোহন মুরলী-বদন ।
অপার সৌন্দর্যে হরে জগন্নেত্র-মন ॥৫৬॥

कोटि-मन्मथ-मोहन मुरली-वदन ।
अपार सौन्दर्य्ये हरे जगन्नेत्र-मन ॥ ५६ ॥

कोटि—करोड़ों; **मन्मथ**—कामदेवों को; **मोहन**—मोहिने वाले; **मुरली-वदन**—होठों पर रखी वंशी से; **अपार**—अपार; **सौन्दर्य्ये**—सुन्दरता से; **हरे**—आकृष्ट करते हैं; **जगत्**—समस्त जगत् की; **नेत्र-मन**—आँखों और मनों को।

अनुवाद

वहाँ पर खड़े अपने होठों पर वंशी रखे हुए, करोड़ों कामदेवों को मोहित करने वाले कृष्ण अपनी असीम सुन्दरता से समस्त जगत् की आँखों तथा मनों को आकृष्ट कर रहे थे।

সৌন্দর্য দেখিয়া ভূমে পড়ে মূর্চ্ছা পাঞা ।
হেন-কালে স্বরূপাদি মিলিলা আসিয়া ॥৫৭॥

सौन्दर्य्य देखिया भूमे पड़े मूर्च्छा पाञा ।
हेन-काले स्वरूपादि मिलिला आसिया ॥ ५७ ॥

सौन्दर्य्य—सौन्दर्य; **देखिया**—देखकर; **भूमे**—भूमि पर; **पड़े**—गिर पड़े; **मूर्च्छा पाञा**—अचेत होकर; **हेन-काले**—उस समय; **स्वरूप-आदि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी आदि भक्तगण; **मिलिला आसिया**—वहाँ आये और मिले।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने भगवान् की दिव्य सुन्दरता देखी, तो वे अचेत होकर भूमि पर गिर पड़े। उस समय स्वरूप दामोदर गोस्वामी इत्यादि सारे भक्तगण उस पुष्पवाटिका में उनके पास आ गये।

পূর্ববজ্সর্বাঙ্গে সাত্ত্বিক-ভাব-সকল ।
অন্তরে আনন্দ-আস্বাদ, বাহিরে বিহ্বল ॥৫৮॥

पूर्ववत्सर्वाङ्गे सात्त्विक-भाव-सकल ।
अन्तरे आनन्द-आस्वाद, बाहिरे विह्वल ॥ ५८ ॥

पूर्व-वत्—पहले की ही तरह; **सर्व-अङ्गे**—सम्पूर्ण शरीर में; **सात्त्विक**—दिव्य; **भाव-सकल**—प्रेमावेश के लक्षणों को; **अन्तरे**—भीतर से; **आनन्द-आस्वाद**—दिव्य आनन्द का आस्वादन; **बाहिरे**—बाहर से; **विह्वल**—विह्वल।

अनुवाद

उन्होंने पहले की ही तरह श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में दिव्य प्रेमावेश के लक्षणों को प्रकट देखा। यद्यपि वे बाहर से विह्वल लग रहे थे, किन्तु भीतर से वे दिव्य आनन्द का आस्वादन कर रहे थे।

পূর্ববৎসবে মিলি' করাইলা চেতন ।
উঠিয়া চৌদিকে প্রভু করেন দর্শন ॥৫৯॥

पूर्ववत्सबे मिलि' कराइला चेतन ।
उठिया चौदिके प्रभु करेन दर्शन ॥५९॥

पूर्व-वत्—पहले की ही तरह; **सबे**—सारे; **मिलि'**—साथ मिलकर; **कराइला चेतन**—चेतना लाई; **उठिया**—उठकर; **चौ-दिके**—चारों ओर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन दर्शन**—देखने लगे।

अनुवाद

एक बार फिर सारे भक्तों ने मिलकर प्रयासपूर्वक श्री चैतन्य महाप्रभु को फिर से सचेत किया। तब महाप्रभु उठे और चारों ओर देखते हुए इधर-उधर घूमने लगे।

"কাহাঁ গেলা কৃষ্ণ? এখনি পাইনু দরশন! ।
তাঁহার সৌন্দর্য মোর হরিল নেত্র-মন! ॥৬০॥

"काहाँ गेला कृष्ण? एखनि पाइनु दरशन! ।
ताँहार सौन्दर्य्र मोर हरिल नेत्र-मन! ॥६०॥

काहाँ—कहाँ; **गेला कृष्ण**—कृष्ण चले गये; **एखनि**—अभी-अभी; **पाइनु दरशन**—मैंने देखा; **ताँहार**—उनका; **सौन्दर्य्र**—सौन्दर्य; **मोर**—मेरे; **हरिल**—हर लिये; **नेत्र-मन**—आँख और मन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "मेरे कृष्ण कहाँ चले गये हैं? मैंने उन्हें अभी देखा था और उनके सौन्दर्य ने मेरे नेत्रों तथा मन को हर लिया है।

পুনঃ কেনে না দেখিয়ে মুরলী-বদন! ।
তাঁহার দর্শন-লোভে ভ্রময় নয়ন'' ॥৬১॥

পুনঃ কেনে না দেখিয়ে মুরলী-বদন! ।
তাঁহার দর্শন-লোভে ভ্রময় নয়ন" ॥৬১॥

पुनः—पुनः; **केने**—क्यों; **ना देखिये**—मैं नहीं देखता हूँ; **मुरली-वदन**—होठों पर मुरली रखे; **ताँहार**—उनको; **दर्शन-लोभे**—देखने की आशा से; **भ्रमय**—घूम रही; **नयन**—मेरी आँखें।

अनुवाद

"मैं कृष्ण को उनके होठों पर मुरली रखे पुनः क्यों नहीं देख पा रहा हूँ? मेरी आँखें उन्हें एक बार पुनः देखने की आशा से इधर-उधर घूम रही हैं।"

বিশাখারে রাধা যৈছে শ্লোক কহিলা ।
সেই শ্লোক মহাপ্রভু পড়িতে লাগিলা ॥৬২॥

বিশাখারে রাধা য়ৈছে শ্লোক কহিলা ।
সেই শ্লোক মহাপ্রভু পড়িতে লাগিলা ॥৬২॥

विशाखारे—विशाखा से; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **य़ैछे**—जैसे; **श्लोक कहिला**—श्लोक कहा; **सेइ**—वह; **श्लोक**—श्लोक; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पड़िते लागिला**—पढ़ना शुरू किया।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने निम्नलिखित श्लोक सुनाया, जिसे श्रीमती राधारानी ने अपनी प्रिय सखी विशाखा से कहा था।

নবাম্বুদ-লসদ্দ্যুতির্নব-তড়িন্মনোজ্ঞাম্বরঃ
সুচিত্র-মুরলী-স্ফুরচ্ছরদমন্দ-চন্দ্রাননঃ ।
ময়ূর-দল-ভূষিতঃ সুভগ-তার-হার-প্রভঃ
স মে মদন-মোহনঃ সখি তনোতি নেত্র-স্পৃহাম্ ॥৬৩॥

নবাম্বুদ-লসদ্দ্যুতির্নব-তড়িন্মনোজ্ঞাম্বরঃ
সুচিত্র-মুরলী-স্ফুরচ্ছরদমন্দ-চন্দ্রাননঃ ।

मयूर-दल-भूषितः सुभग-तार-हार-प्रभः
स मे मदन-मोहनः सखि तनोति नेत्र-स्पृहाम् ॥ ६३ ॥

नव-अम्बुद—नवनिर्मित बादल; **लसत्**—तेजोमय; **द्युतिः**—जिसकी आभा; **नव**—नवीन; **तड़ित्**—बिजली से; **मनोज्ञ**—आकर्षक; **अम्बरः**—जिनके वस्त्र; **सु-चित्र**—अत्यन्त मनोहर; **मुरली**—मुरली के साथ; **स्फुरत्**—सुन्दर लगने वाला; **शरत्**—शरद ऋतु; **अमन्द**—चमकीला; **चन्द्र**—चन्द्रमा के समान; **आननः**—जिनका मुखमण्डल; **मयूर**—मोर; **दल**—पंख के साथ; **भूषितः**—सुशोभित; **सु-भग**—सुहावना; **तार**—मोतियों की; **हार**—गले की माला; **प्रभः**—आभा से; **सः**—वे; **मे**—मेरा; **मदन-मोहनः**—भगवान् कृष्ण, कामदेव को मोहित करने वाले; **सखि**—हे प्रिय सखी; **तनोति**—बढ़ाते हैं; **नेत्र-स्पृहाम्**—आँखों की इच्छाएँ।

अनुवाद

"'हे प्रिय सखी, कृष्ण के शरीर की द्युति नवनिर्मित बादल से भी अधिक तेजोमय है और उनका पीताम्बर प्रकट होने वाली नवीन बिजली से अधिक आकर्षक है। उनके सिर पर मोरपंख सुशोभित है और उनके गले में मोतियों की चमकीली माला लटक रही है। ज्योंही वे अपने होठों पर मनोहर मुरली धारण करते हैं, उनका मुखमण्डल पूर्ण शरत्कालीन चन्द्रमा के समान सुन्दर लगता है। ऐसे सौन्दर्य से युक्त कामदेव को मोहित करने वाले मदनमोहन उनके दर्शनार्थ मेरी आँखों की इच्छाओं को बढ़ा रहे हैं।"

तात्पर्य

यह श्लोक *गोविन्दलीलामृत* (८.४) में भी आया है।

নব-ঘন-স্নিগ্ধ-বর্ণ, দলিতাঞ্জন-চিক্কণ,
ইন্দীবর-নিন্দি সুকোমল ।
জিনি' উপমান-গণ, হরে সবার নেত্র-মন,
কৃষ্ণ-কান্তি পরম প্রবল ॥ ৬৪ ॥

নব-ঘন-স্নিগ্ধ-বর্ণ, দলিতাঞ্জন-চিক্কণ,
ইন্দীবর-নিন্দি সুকোমল ।
জিনি' উপমান-গণ, হরে সবার নেত্র-মন,
কৃষ্ণ-কান্তি পরম প্রবল ॥ ৬৪ ॥

नव-घन—नवनिर्मित बादल; **स्निग्ध**—आकर्षक; **वर्ण**—शरीर का रंग; **दलित**—चूर्ण किया हुआ; **अञ्जन**—अंजन; **चिक्कण**—चमकीला; **इन्दीवर**—नीलकमल; **निन्दि**—से अधिक; **सु-कोमल**—कोमल; **जिनि'**—पार कर जाता है; **उपमान-गण**—सारी उपमाओं को; **हरे**—आकृष्ट करता है; **सबार**—सारे; **नेत्र-मन**—नेत्र और मन; **कृष्ण-कान्ति**—कृष्ण का रंग; **परम प्रबल**—अति श्रेष्ठ।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "श्रीकृष्ण का रंग चूर्ण किये हुए अंजन की भाँति चमकीला है। यह नवनिर्मित बादल की शोभा को अतिक्रमण करने वाला है और नीले कमल से भी अधिक कोमल है। निस्सन्देह, उनका रंग इतना मोहक है कि यह हर एक के नेत्रों तथा मन को आकृष्ट करता है और इतना प्रबल है कि सारी उपमाओं को पार कर जाता है।

কহ, সখি, কি করি উপায়?
কৃষ্ণাদ্ভুত বলাহক, মোর নেত্র-চাতক, ।
না দেখি' পিয়াসে মরি' যায় ॥৬৫॥

कह, सखि, कि करि उपाय?
कृष्णाद्भुत बलाहक, मोर नेत्र-चातक, ।
ना देखि' पियासे मरि' ग्राय ॥ ६५ ॥

कह—कृपया कहो; **सखि**—हे प्रिय सखी; **कि करि उपाय**—मैं क्या करूँ; **कृष्ण**—कृष्ण; **अद्भुत**—अद्भुत; **बलाहक**—बादल; **मोर**—मेरी; **नेत्र**—आँखें; **चातक**—चातक पक्षी की तरह; **ना देखि'**—ना देखे; **पियासे**—प्यास से; **मरि' ग्राय**—मरूँगा।

अनुवाद

"हे प्रिय सखी, मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ? कृष्ण अद्भुत बादल के समान आकर्षक हैं और मेरी आँखें चातक पक्षी के समान हैं, जो प्यास के मारे मर रही हैं, क्योंकि वे ऐसा बादल नहीं देख पा रहीं।

সৌদামিনী পীতাম্বর, স্থির নহে নিরন্তর,
মুক্তা-হার বক-পাঁতি ভাল ।
ইন্দ্র-ধনু শিখি-পাখা, উপরে দিয়াছে দেখা,
আর ধনু বৈজয়ন্তী-মাল ॥৬৬॥

सौदामिनी पीताम्बर, स्थिर नहे निरन्तर,
मुक्ता-हार बक-पाँति भाल ।
इन्द्र-धनु शिखि-पाखा, उपरे दियाछे देखा,
आर धनु वैजयन्ती-माल ॥ ६६ ॥

सौदामिनी—बिजली; **पीत-अम्बर**—पीताम्बर; **स्थिर**—स्थिर; **नहे**—नहीं है; **निरन्तर**—सदैव; **मुक्ता-हार**—मोती की माला; **बक-पाँति भाल**—बगुलों की पंक्ति जैसी; **इन्द्र-धनु**—इन्द्रधनुष; **शिखि-पाखा**—मोर पंख; **उपरे**—सिर पर; **दियाछे देखा**—दिखता है; **आर धनु**—अन्य इन्द्रधनुष; **वैजयन्ती-माल**—वैजयन्ती माला।

अनुवाद

"कृष्ण का पीताम्बर आकाश में चंचल बिजली के समान प्रतीत होता है और उनके गले की मोती की माला बादल के नीचे उड़ रही बगुलों की पंक्ति जैसी प्रतीत होती है। उनके सिर का मोर पंख तथा उनकी वैजयन्ती माला (पाँच रंग के फूलों वाली) इन्द्रधनुषों के समान लगती है।

मुरलीर कल-ध्वनि, मधुर गर्जन शुनि',
वृन्दावने नाचे मयूर-चय ।
अकलङ्क पूर्ण-कल, लावण्य-ज्योत्स्ना झलमल,
चित्र-चन्द्रेर ताहाते उदय ॥ ६७ ॥

मुरलीर कल-ध्वनि, मधुर गर्जन शुनि',
वृन्दावने नाचे मयूर-चय ।
अकलङ्क पूर्ण-कल, लावण्य-ज्योत्स्ना झलमल,
चित्र-चन्द्रेर ताहाते उदय ॥ ६७ ॥

मुरलीर—मुरली की; **कल-ध्वनि**—धीमी कम्पन; **मधुर**—मधुर; **गर्जन**—गरजते हुए; **शुनि**—सुनकर; **वृन्दावने**—वृन्दावन के सारे; **नाचे**—नृत्य; **मयूर-चय**—मोर; **अकलङ्क**—निष्कलंक; **पूर्ण-कल**—पूर्ण चन्द्रमा; **लावण्य**—सौन्दर्य; **ज्योत्स्ना**—प्रकाश; **झलमल**—चमकती; **चित्र-चन्द्रेर**—सुन्दर चन्द्रमा के; **ताहाते**—उसमें; **उदय**—उठना।

अनुवाद

"कृष्ण के शरीर की कान्ति नवोदित निष्कलंक पूर्ण चन्द्रमा के समान सुन्दर है और उनकी वंशी की ध्वनि नवनिर्मित बादल की मधुर

गर्जना के समान है। जब वृन्दावन के मोर उस ध्वनि को सुनते हैं, तो वे नृत्य करने लगते हैं।

লীলামৃত-বরিষণে, সিঞ্চে চৌদ্দ ভুবনে,
হেন মেঘ যবে দেখা দিল ।
দুর্দৈব-ঝঞ্ঝা-পবনে, মেঘে নিল অন্য-স্থানে,
মরে চাতক, পিতে না পাইল ॥৬৮॥

লীলামৃত-বরিষণে, সিঞ্চে চৌদ্দ ভুবনে,
হেন মেঘ য়বে দেখা দিল ।
দুর্দৈব-ঝঞ্ঝা-পবনে, মেঘে নিল অন্য-স্থানে,
মরে চাতক, পিতে না পাইল ॥৬৮॥

लीला—कृष्ण की लीलाएँ; **अमृत**—अमृत; **वरिषणे**—अमृतवर्षा; **सिञ्चे**—सिक्त कर रहे हैं; **चौद्द भुवने**—चौदहों लोकों को; **हेन मेघ**—ऐसा बादल; **य्रबे**—जब; **देखा दिल**—देख लिया; **दुर्दैव**—दुर्भाग्यवश; **झञ्झा-पवने**—हवा का झोंका; **मेघे**—बादल; **निल**—लाया; **अन्य-स्थाने**—अन्य जगह; **मरे**—मृतप्राय; **चातक**—चातक पक्षी; **पिते ना पाइल**—पी न सका।

अनुवाद

"कृष्ण-लीलाओं का बादल अपनी अमृतवर्षा से चौदहों लोकों को सिक्त कर रहा है। दुर्भाग्यवश जब वह बादल प्रकट हुआ, तो हवा का एक प्रबल झोंका आया जो उसे मुझसे दूर उड़ा ले गया। उस बादल को न देख पाकर मेरे चकोर रूपी नेत्र प्यास से मृतप्राय हो गये हैं।"

পুনঃ কহে,—'হায় হায়, পড় পড় রাম-রয়',
কহে প্রভু গদগদ আখ্যানে ।
রামানন্দ পড়ে শ্লোক, শুনি' প্রভুর হর্ষ-শোক,
আপনে প্রভু করেন ব্যাখ্যানে ॥৬৯॥

পুনঃ কহে,—'হায় হায়, পড় পড় রাম-রয়',
কহে প্রভু গদ্‌গদ আখ্যানে ।
রামানন্দ পড়ে শ্লোক, শুনি' প্রভুর হর্ষ-শোক,
আপনে প্রভু করেন ব্যাখ্যানে ॥৬৯॥

पुनः—पुनः; **कहे**—कहा; **हाय हाय**—हाय, हाय; **पड़ पड़**—पढ़ते रहो; **राम-राय**—रामानन्द राय; **कहे**—कहा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गद्गद आख्याने**—अवरुद्ध वाणी में; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **पड़े**—पढ़ो; **श्लोक**—श्लोक; **शुनि'**—सुनकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **हर्ष-शोक**—हर्षित और शोकसंतप्त; **आपने**—स्वयं ही; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन व्याख्याने**—व्याख्या करने लगे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अवरुद्ध वाणी से पुनः कहा, "हाय, हाय, रामराय, तुम पढ़ते रहो।" इस तरह रामानन्द राय एक श्लोक पढ़ने लगे। इस श्लोक को सुनते हुए महाप्रभु कभी अत्यधिक हर्षित होते, तो कभी शोकसंतप्त हो जाते। बाद में महाप्रभु ने स्वयं ही इस श्लोक की व्याख्या की।

वीक्ष्यालकावृत-मुखं तव कुण्डल-श्री-
गण्ड-स्थलाधर-सुधं हसितावलोकम् ।
दत्ताभयं च भुज-दण्ड-युगं विलोक्य
वक्षः श्रियैक-रमणं च भवाम दास्यः ॥७०॥

वीक्ष्यालकावृत-मुखं तव कुण्डल-श्री-
गण्ड-स्थलाधर-सुधं हसितावलोकम् ।
दत्ताभयं च भुज-दण्ड-युगं विलोक्य
वक्षः श्रियैक-रमणं च भवाम दास्यः ॥७०॥

वीक्ष्य—देखकर; **अलक-आवृत**—घुँघराले बालों से सुशोभित; **मुखम्**—मुख; **तव**—आपके; **कुण्डल-श्री**—कुण्डलों की शोभा; **गण्ड-स्थल**—आपके गाल पर लटकते; **अधर-सुधम्**—आपके होठों के अमृत को; **हसित-अवलोकम्**—आपकी हँसी की (चितवन) चमक; **दत्त-अभयम्**—अभय प्रदान करनेवाली; **च**—और; **भुज-दण्ड-युगम्**—दोनों भुजाओं को; **विलोक्य**—देखकर; **वक्षः**—वक्ष; **श्रिया**—के सौन्दर्य से; **एक-रमणम्**—दाम्पत्य का आकर्षण उत्पन्न करनेवाले; **च**—और; **भवाम**—हम हो गई हैं; **दास्यः**—आपकी दासी।

अनुवाद

"'हे कृष्ण, घुँघराले बालों से सुशोभित आपके सुन्दर मुख को, आपके गाल पर लटकते कुण्डलों की शोभा को, आपके होठों के अमृत

को, आपकी हँसीली चितवनों के सौन्दर्य को, अभय प्रदान करनेवाली आपकी दोनों भुजाओं को तथा दाम्पत्य का आकर्षण उत्पन्न करनेवाला आपके चौड़े वक्षस्थल के सौन्दर्य को देखकर हमने आपकी दासी बनने के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया है।'"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.२९.३९) से है, जिसे गोपियों ने रास नृत्य के समय कृष्ण के पास आने पर कहा था।

कृष्ण जिनि' पद्म-चान्द, पातियाछे मुख फान्द,
ताते अधर-मधु-स्मित चार ।
व्रज-नारी आसि' आसि', फान्दे पड़ि' हय दासी,
छाड़ि' लाज-पति-घर-द्वार ॥७१॥

कृष्ण जिनि' पद्म-चान्द, पातियाछे मुख फान्द,
ताते अधर-मधु-स्मित चार ।
व्रज-नारी आसि' आसि', फान्दे पड़ि' हय दासी,
छाड़ि' लाज-पति-घर-द्वार ॥७१॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण; **जिनि'**—जीतने के पर; **पद्म-चान्द**—कमल फूल और चन्द्रमा; **पातियाछे**—फैलाया; **मुख**—मुख; **फान्द**—फन्दे को; **ताते**—उसमें; **अधर**—होंठ; **मधु-स्मित**—मधुर हँसी; **चार**—चारा; **व्रज-नारी**—व्रज की नारियाँ; **आसि' आसि'**—आकर; **फान्दे**—फन्दे में; **पड़ि'**—पड़ने के लिए; **हय दासी**—दासियाँ बन गई; **छाड़ि'**—छोड़कर; **लाज**—प्रतिष्ठा; **पति**—पति; **घर**—घर; **द्वार**—परिवार।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "चन्द्रमा तथा कमल को जीत लेने के बाद कृष्ण ने मृगी समान गोपियों को पकड़ना चाहा। इसलिए उन्होंने अपने सुन्दर मुख रूपी फन्दे को फैला दिया और गोपियों को फँसाने के लिए उसमें अपनी मधुर हँसी का चारा रख दिया। गोपियाँ उस फन्दे की शिकार बन गईं और अपने घर, परिवार, पति तथा प्रतिष्ठा को त्यागकर कृष्ण की दासियाँ बन गईं।

বান্ধব কৃষ্ণ করে ব্যাধের আচার
নাহি মানে ধর্মাধর্ম, হরে নারী-মৃগী-মর্ম, ।
করে নানা উপায় তাহার ॥৭২॥

बान्धव कृष्ण करे व्याधेर आचार
नाहि माने धर्माधर्म, हरे नारी-मृगी-मर्म, ।
करे नाना उपाय ताहार ॥७२॥

बान्धव—हे सखी; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **करे**—किया; **व्याधेर आचार**—शिकारी जैसा आचरण; **नाहि**—नहीं; **माने**—परवाह करते; **धर्म-अधर्म**—धर्म और अधर्म; **हरे**—आकर्षित करते हैं; **नारी**—स्त्री के; **मृगी**—मृगी; **मर्म**—हृदय को; **करे**—किया; **नाना**—नाना प्रकार की; **उपाय**—युक्तियाँ; **ताहार**—उस प्रयोजन के लिए।

अनुवाद

"हे सखी, कृष्ण एक शिकारी जैसा ही आचरण करते हैं। यह शिकारी पुण्य या पाप की परवाह नहीं करता। वह मृगी सदृश गोपियों के अन्तरतम को जीतने के लिए नाना प्रकार की युक्तियाँ अपनाता है।

গণ্ড-স্থল ঝলমল, নাচে মকর-কুণ্ডল,
সেই নৃত্যে হরে নারী-চয় ।
সস্মিত কটাক্ষ-বাণে, তা-সবার হৃদয়ে হানে,
নারী-বধে নাহি কিছু ভয় ॥৭৩॥

गण्ड-स्थल झलमल, नाचे मकर-कुण्डल,
सेइ नृत्ये हरे नारी-चय ।
सस्मित कटाक्ष-बाणे, ता-सबार हृदये हाने,
नारी-वधे नाहि किछु भय ॥७३॥

गण्ड-स्थल—गालों पर; **झलमल**—चमकते; **नाचे**—नृत्य करते; **मकर-कुण्डल**—मकर के आकार के कुण्डल; **सेइ**—वह; **नृत्ये**—नृत्य करते; **हरे**—आकर्षित करते; **नारी-चय**—सारी स्त्रियाँ; **स-स्मित**—मधुर मुस्कान; **कटाक्ष**—चितवन के; **बाणे**—बाणों से; **ता-सबार**—सभी के; **हृदये**—हृदय को; **हाने**—बेधकर; **नारी-वधे**—स्त्रियों का वध; **नाहि**—नहीं; **किछु**—करते हुए; **भय**—भय।

अनुवाद

"कृष्ण के गालों पर नृत्य करते कुण्डल मकर के आकार के हैं और

वे बहुत उज्जवल प्रकाश से चमकते हैं। ये नृत्य करते कुण्डल सारी स्त्रियों के मनों को आकर्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त कृष्ण अपनी मधुर मुस्कान भरी चितवन के बाणों से स्त्रियों के हृदयों को बेध देते हैं। इस तरह से स्त्रियों का वध करते हुए वे तनिक भी भयभीत नहीं होते।

অতি উচ্চ সুবিস্তার, লক্ষ্মী-শ্রীবত্স-অলঙ্কার,
কৃষ্ণের যে ডাকাতিয়া বক্ষ ।
ব্রজ-দেবী লক্ষ লক্ষ, তা-সবার মনো-বক্ষ,
হরি-দাসী করিবারে দক্ষ ॥৭৪॥

अति उच्च सुविस्तार, लक्ष्मी-श्रीवत्स-अलङ्कार,
कृष्णेर ये डाकातिया वक्ष ।
व्रज-देवी लक्ष लक्ष, ता-सबार मनो-वक्ष,
हरि-दासी करिबारे दक्ष ॥७४॥

अति—अधिक; **उच्च**—उच्च; **सु-विस्तार**—चौड़ा; **लक्ष्मी-श्रीवत्स**—भगवान् के वक्षस्थल की दाई ओर चाँदी के बालों का चिह्न, लक्ष्मी के निवास का सूचक; **अलङ्कार**—आभूषण; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **ये**—वह; **डाकातिया**—लुटेरों जैसा; **वक्ष**—वक्षस्थल; **व्रज-देवी**—व्रज की सुन्दरियाँ; **लक्ष लक्ष**—लाखों; **ता-सबार**—वे सब; **मनः-वक्ष**—मन और वक्षस्थल; **हरि-दासी**—भगवान् की दासियाँ; **करिबारे**—बनाने में; **दक्ष**—दक्ष।

अनुवाद

"कृष्ण के वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिह्न जैसे आभूषण हैं, जो लक्ष्मी के निवास का सूचक चिह्न है। उनका वक्षस्थल, जो लुटेरों के वक्षस्थल जैसा चौड़ा है, लाखों व्रजबालाओं के मनों तथा वक्षस्थलों को बलात् आकृष्ट करता है। इस तरह वे सब पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की दासियाँ बन जाती हैं।

সুললিত দীর্ঘার্গল, কৃষ্ণের ভুজ-যুগল,
ভুজ নহে,—কৃষ্ণ-সর্প-কায় ।
দুই শৈল-ছিদ্রে পৈশে, নারীর হৃদয়ে দংশে,
মরে নারী সে বিষ-জ্বালায় ॥৭৫॥

सुललित दीर्घार्गल, कृष्णेर भुज-द्वयगल,
भुज नहे,—कृष्ण-सर्प-काय ।
दुइ शैल-छिद्रे पैशे, नारीर हृदये दंशे,
मरे नारी से विष-ज्वालाय ॥ ७५ ॥

सु-ललित—अत्यन्त सुन्दर; **दीर्घ-अर्गल**—लम्बी जंजीरों; **कृष्णेर**—कृष्ण की; **भुज-द्वयगल**—दोनों भुजाएँ; **भुज**—भुजाएँ; **नहे**—नहीं; **कृष्ण**—काले; **सर्प**—सर्पों के; **काय**—शरीर से; **दुइ**—दो; **शैल-छिद्रे**—दो पर्वतों के बीच की जगह; **पैशे**—प्रवेश; **नारीर**—स्त्रियों के; **हृदये**—हृदय में; **दंशे**—डस; **मरे**—मर जाती है; **नारी**—स्त्री; **से**—वह; **विष-ज्वालाय**—विष की अगन से।

अनुवाद

"कृष्ण की दोनों सुन्दर भुजाएँ लम्बी जंजीरों (पाश) के समान हैं। वे उन काले सर्पों के शरीर से भी मिलती जुलती हैं, जो स्त्रियों के दो पर्वताकार-स्तनों के बीच की सन्धि में प्रवेश करके उनके हृदयों को डस लेते हैं। तब स्त्रियाँ विष की अगन से मर जाती हैं।

तात्पर्य

दूसरे शब्दों में, गोपियाँ कामवासना से अत्यन्त उत्तेजित हो उठती हैं। वे कृष्ण की सुन्दर बाहों रूपी काले सर्पों के डसने से उत्पन्न विष से जल रही हैं।

कृष्ण-कर-पद-तल, कोटि-चन्द्र-सुशीतल,
जिनि' कर्पूर-वेणा-मूल-चन्दन ।
एक-बार यार स्पर्शे, स्मर-ज्वाला-विष नाशे,
यार स्पर्शे लुब्ध नारी-मन ॥ ७६ ॥

कृष्ण-कर-पद-तल, कोटि-चन्द्र-सुशीतल,
जिनि' कर्पूर-वेणा-मूल-चन्दन ।
एक-बार द्वार स्पर्शे, स्मर-ज्वाला-विष नाशे,
द्वार स्पर्शे लुब्ध नारी-मन ॥ ७६ ॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण के; **कर-पद-तल**—हथेलियाँ और पैरों के तलवे; **कोटि-चन्द्र**—करोड़ों चन्द्रमाओं; **सु-शीतल**—शीतल और मनभावन; **जिनि'**—मात करती है;

कर्पूर—कपूर; **वेणा-मूल**—खसखस की जड़ें; **चन्दन**—चन्दन लेप; **एक-बार**—एक बार; **यार**—जिसके; **स्पर्शे**—स्पर्श से; **स्मर-ज्वाला**—कामवासना की ज्वाला; **विष**—विषविष; **नाशे**—नष्ट हो जाता है; **यार**—जिसके; **स्पर्शे**—स्पर्श से; **लुब्ध**—लुभा जाना, बहक जाना; **नारी-मन**—स्त्रियों का मन।

अनुवाद

"कपूर, खसखस की जड़ें तथा चन्दन इन तीनों के सम्मिलित शीतलकारी प्रभाव को कृष्ण की हथेलियों की तथा उनके पैरों के तलवों की शीतलता अतिक्रमण कर जाती है, क्योंकि ये करोड़ों चन्द्रमाओं से भी अधिक शीतल तथा मनभावन हैं। यदि स्त्रियों को इनका एक बार भी स्पर्श हो जाता है, तो उनके मन बहक जाते हैं और कृष्ण के लिए कामेच्छा की विष ज्वाला तुरन्त दूर हो जाती है।"

এতেক বিলাপ করি' প্রেমাবেশে গৌরহরি,
এই অর্থে পড়ে এক শ্লোক ।
সেই শ্লোক পড়ি' রাধা, বিশাখারে কহে বাধা,
উঘাড়িয়া হৃদয়ের শোক ॥৭৭॥

এতেক বিলাপ করি' প্রেমাবেশে গৌরহরি,
এই অর্থে পড়ে এক শ্লোক ।
সেই শ্লোক পড়ি' রাধা, বিশাখারে কহে বাধা,
উঘাড়িয়া হৃদয়ের শোক ॥৭৭॥

एतेक—ऐसा; **विलाप करि'**—विलाप करते; **प्रेम-आवेशे**—कृष्ण के प्रेमावेश में; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **एइ अर्थे**—आशय समझने में; **पड़े**—पढ़ा; **एक श्लोक**—एक श्लोक; **सेइ श्लोक**—यह श्लोक; **पड़ि'**—पढ़कर; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **विशाखारे**—विशाखा को; **कहे**—कहा; **बाधा**—बाधा; **उघाड़िया**—प्रकट किया; **हृदयेर**—हृदय का; **शोक**—शोक।

अनुवाद

प्रेमावेश में विलाप करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने तब निम्नलिखित श्लोक सुनाया, जिसे श्रीमती राधारानी ने अपनी सखी श्रीमती विशाखा से अपने हृदय का शोक प्रकट करने के लिए कहा था।

हरिण्मणि-कवाटिका-प्रतत-हारि-वक्षः-स्थलः
स्मरार्त-तरुणी-मनः-कलुष-हारि-दोरर्गलः ।
सुधांशु-हरि-चन्दनोत्पल-सिताभ्र-शीताङ्गकः
स मे मदन-मोहनः सखि तनोति वक्षः-स्पृहाम् ॥ ७८ ॥

हरिण्मणि-कवाटिका-प्रतत-हारि-वक्षः-स्थलः
स्मरार्त-तरुणी-मनः-कलुष-हारि-दोरर्गलः ।
सुधांशु-हरि-चन्दनोत्पल-सिताभ्र-शीताङ्गकः
स मे मदन-मोहनः सखि तनोति वक्षः-स्पृहाम् ॥ ७८ ॥

हरिट्-मणि—इन्द्रनील मणि के; **कवाटिका**—द्वार की तरह; **प्रतत**—चौड़ा; **हारि**—आकर्षक; **वक्षः-स्थलः**—जिनका वक्षस्थल; **स्मर-आर्त**—कामवासना से पीड़ित; **तरुणी**—युवतियों के; **मनः**—मन की; **कलुष**—पीड़ा; **हारि**—हर लेती हैं; **दोः**—जिनकी दोनों बाँहें; **अर्गलः**—जंजीर की तरह; **सुधांशु**—चन्द्रमा; **हरि-चन्दन**—चन्दन; **उत्पल**—कमल फूल; **सिताभ्र**—कपूर; **शीत**—शीतल; **अङ्गकः**—जिनका शरीर; **सः**—वह; **मे**—मेरे; **मदन-मोहनः**—कृष्ण, जो कामदेव से अधिक आकर्षक हैं; **सखि**—हे सखी; **तनोति**—बढ़ा रहे हैं; **वक्षः-स्पृहाम्**—वक्षस्थलों की इच्छा को।

अनुवाद

"'हे सखी, कृष्ण का वक्षस्थल इन्द्रनील मणि से बने द्वार की तरह चौड़ा और आकर्षक है। उनकी दोनों बाँहें जंजीर की तरह दृढ़ हैं और वे उन युवतियों की मानसिक चिन्ता को दूर कर सकती हैं, जो उनके लिए कामेच्छाओं से पीड़ित हैं। उनका शरीर चन्द्रमा, चन्दन, कमल पुष्प तथा कपूर से भी अधिक शीतल है। इस तरह कामदेव को आकर्षित करने वाले मदनमोहन मेरे वक्षस्थलों की इच्छा को बढ़ा रहे हैं।'"

तात्पर्य

यह श्लोक *गोविन्द लीलामृत* (८.७) में भी पाया जाता है।

प्रभु कहे,—"कृष्ण मुञि एखन-ई पाइनु ।
आपनार दुर्दैवे पुनः हाराइनु ॥ ७९ ॥

प्रभु कहे,—"कृष्ण मुञि एखन-इ पाइनु ।
आपनार दुर्दैवे पुनः हाराइनु ॥ ७९ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **मुञि**—मैं; **एखन-इ**—अभी अभी; **पाइनु**—पाया; **आपनार**—मैंने स्वयं; **दुर्दैवे**—दुर्भाग्यवश; **पुनः**—पुनः; **हाराइनु**—खो दिया।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "अभी-अभी मुझे कृष्ण मिले थे, किन्तु दुर्भाग्यवश मैंने पुनः उन्हें खो दिया है।

चञ्चल-स्वभाव कृष्णेर, ना रय एक-स्थाने ।
देखा दिया मन हरि' करे अन्तर्धाने ॥ ८० ॥

चञ्चल-स्वभाव कृष्णेर, ना रय एक-स्थाने ।
देखा दिया मन हरि' करे अन्तर्धाने ॥ ८० ॥

चञ्चल—चंचल; **स्वभाव**—स्वभाव से; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **ना**—नहीं; **रय**—रुकते; **एक-स्थाने**—एक स्थान पर; **देखा दिया**—दर्शन दिया; **मन**—मन; **हरि'**—हर; **करे**—लेते हैं; **अन्तर्धाने**—अन्तर्धान।

अनुवाद

"कृष्ण स्वभाव से अत्यधिक चंचल हैं। वे एक स्थान पर नहीं रुकते। वे किसी से मिलते हैं, उसके मन को हर लेते हैं और तब अन्तर्धान हो जाते हैं।

तासां तत्सौभग-मदं वीक्ष्य मानं च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ॥ ८१ ॥

तासां तत्सौभग-मदं वीक्ष्य मानं च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ॥ ८१ ॥

तासाम्—गोपियों को; **तत्**—उनका; **सौभग-मदम्**—सौभाग्य से गर्वित होना; **वीक्ष्य**—देखकर; **मानम्**—श्रेष्ठता के भाव को; **च**—और; **केशवः**—कृष्ण, ब्रह्मा *क* (ब्रह्माजी) और *ईश* (शिवजी) का दमन करनेवाले; **प्रशमाय**—दमन करने के लिए; **प्रसादाय**—कृपा प्रदर्शित करने के लिए; **तत्र**—वहाँ; **एव**—एव; **अन्तरधीयत**—अन्तर्धान हो गये।

अनुवाद

"'गोपियाँ अपने महान् सौभाग्य से गर्वित हो गईं। उनकी श्रेष्ठता के भाव को दमित करने के लिए तथा उन पर विशेष कृपा प्रदर्शित करने के

लिए केशव, जो कि ब्रह्माजी तथा शिवजी का भी दमन करने वाले हैं, रासनृत्य से अन्तर्धान हो गये।'"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.२९.४८) से उद्धृत है, जिसे शुकदेव गोस्वामी ने महाराज परीक्षित से कहा था।

স্বরূপ-গোসাঞিরে কহেন,—"গাও এক গীত ।
যাতে আমার হৃদয়ের হয়ে ত' 'সম্বিৎ'" ॥৮২॥

स्वरूप-गोसाञिरे कहेन,—"गाओ एक गीत ।
याते आमार हृदयेर हये त' 'सम्वित्'" ॥८२॥

स्वरूप-गोसाञिरे—स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने; **कहेन**—कहा; **गाओ**—गाओ; **एक**—एक; **गीत**—गीत; **याते**—जिससे; **आमार**—मेरे; **हृदयेर**—हृदय को; **हये**—है; **त'**—निश्चित रूप से; **सम्वित्**—चेतना।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर गोस्वामी से कहा, "आप कृपया एक गीत गाओ जो मेरे हृदय को सचेष्ट कर सके।"

স্বরূপ-গোসাঞি তবে মধুর করিয়া ।
গীত-গোবিন্দের পদ গায় প্রভুরে শুনাঞা ॥৮৩॥

स्वरूप-गोसाञि तबे मधुर करिया ।
गीत-गोविन्देर पद गाय प्रभुरे शुनाञा ॥८३॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **तबे**—उसके बाद; **मधुर करिया**—अत्यन्त मधुरता से; **गीत-गोविन्देर**—गीत गोविन्द नामक ग्रन्थ का; **पद**—एक पद; **गाय**—गाया; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **शुनाञा**—को सुनाया।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु की प्रसन्नता के लिए स्वरूप दामोदर गोस्वामी गीत गोविन्द का निम्नलिखित पद अत्यन्त मधुर स्वर में गाने लगे।

রাসে হরিমিহ বিহিত-বিলাসম্ ।
স্মরতি মনো মম কৃত-পরিহাসম্ ॥৮৪॥

रासे हरिमिह विहित-विलासम् ।
स्मरति मनो मम कृत-परिहासम् ॥८४॥

रासे—रास नृत्य में; **हरिम्**—श्रीकृष्ण; **इह**—यहाँ; **विहित-विलासम्**—लीलाएँ करते हुए; **स्मरति**—स्मरण करती; **मनः**—मन; **मम**—मेरा; **कृत-परिहासम्**—परिहास करने का इच्छुक।

अनुवाद

"'यहाँ रास नृत्य के स्थल में मैं कृष्ण का स्मरण करती हूँ, जिन्हें परिहास करना तथा लीलाएँ करना अत्यन्त प्रिय है।"

तात्पर्य

यह श्लोक *गीतगोविन्द* (२.३) से उद्धृत है और श्रीमती राधारानी द्वारा गाया गया है।

স্বরূপ-গোসাঞি যবে এই পদ গাহিলা ।
উঠি' প্রেমাবেশে প্রভু নাচিতে লাগিলা ॥৮৫॥

स्वरूप-गोसाञि यबे एइ पद गाहिला ।
उठि' प्रेमावेशे प्रभु नाचिते लागिला ॥८५॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **यबे**—जब; **एइ**—यह; **पद**—पद; **गाहिला**—गाया; **उठि'**—उठ खड़े हुए; **प्रेम-आवेशे**—कृष्ण के प्रेमावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नाचिते लागिला**—नृत्य करने लगे।

अनुवाद

जब स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने यह विशिष्ट पद गाया, तो श्री चैतन्य महाप्रभु तुरन्त उठ खड़े हुए और प्रेमावेश में नृत्य करने लगे।

'অষ্ট-সাত্ত্বিক' ভাব অঙ্গে প্রকট হ-ইল ।
হর্ষাদি 'ব্যভিচারী' সব উথলিল ॥৮৬॥

'अष्ट-सात्त्विक' भाव अङ्गे प्रकट ह-इल ।
हर्षादि 'व्यभिचारी' सब उथलिल ॥८६॥

अष्ट-सात्त्विक—आठ आध्यात्मिक; **भाव**—भाव; **अङ्गे**—शरीर में; **प्रकट ह-इल**—प्रकट हुए; **हर्ष-आदि**—हर्ष इत्यादि; **व्यभिचारी**—तैतीसों व्यभिचारी भाव; **सब**—सभी; **उथलिल**—प्रकट हुए।

अनुवाद

उस समय श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में आठों प्रकार के आध्यात्मिक विकार (सात्त्विक भाव) प्रकट हो आये। यही नहीं, शोक तथा हर्ष इत्यादि तैतीसों व्यभिचारी भाव भी प्रकट हो गये।

ভাবোদয়, ভাব-সন্ধি, ভাব-শাবল্য ।
ভাবে-ভাবে মহা-যুদ্ধে সবার প্রাবল্য ॥ ৮৭॥

भावोदय, भाव-सन्धि, भाव-शाबल्य ।
भावे-भावे महा-युद्धे सबार प्राबल्य ॥ ८७॥

भाव-उदय—सभी भावमय लक्षणों का प्राकट्य; **भाव-सन्धि**—भावमय लक्षणों की सन्धि; **भाव-शाबल्य**—भावमय लक्षणों का मिश्रण; **भावे-भावे**—भावों के बीच; **महा-युद्धे**—महायुद्ध; **सबार**—उन सब में; **प्राबल्य**—प्रबल।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में सारे भाव लक्षण यथा भावोदय, भाव-सन्धि तथा भावशाबल्य उदय हो आये। फिर भावों में परस्पर विकट युद्ध होने लगा और उनमें से हर एक प्रधान बन गया।

সেই পদ পুনঃ পুনঃ করায় গায়ন ।
পুনঃ পুনঃ আস্বাদয়ে, করেন নর্তন ॥ ৮৮॥

सेइ पद पुनः पुनः कराय गायन ।
पुनः पुनः आस्वादये, करेन नर्तन ॥ ८८॥

सेइ पद—उसी श्लोक को; **पुनः पुनः**—बारम्बार; **कराय गायन**—गाने के लिए कहा; **पुनः पुनः**—बारम्बार; **आस्वादये**—आस्वादन; **करेन नर्तन**—नृत्य करते।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर से बारम्बार उसी श्लोक को

गाने के लिए कहा। वे जितनी बार गाते, महाप्रभु को नया आस्वादन प्राप्त होता और वे बारम्बार नृत्य करने लगते।

এই-মত নৃত্য যদি হ-ইল বহু-ক্ষণ ।
স্বরূপ-গোসাঞি পদ কৈলা সমাপন ॥৮৯॥

এइ-মত নৃত্য য়দি হ-ইল বহু-ক্ষণ ।
স্বরূপ-গোসাঞি পদ কৈলা সমাপন ॥৮৯॥

এइ-মত—इस तरह; **নৃত্য**—नृत्य करते; **য়দি**—जब; **হ-ইল**—करते; **বহু-ক্ষণ**—देर तक; **স্বরূপ-গোসাঞি**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **পদ**—श्लोक; **কৈলা সমাপন**—बन्द कर दिया।

अनुवाद

जब महाप्रभु देर तक नृत्य करते रहे, तब स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने उस श्लोक को गाना बन्द कर दिया।

'বল্' 'বল্' বলি' প্রভু কহেন বার-বার ।
না গায় স্বরূপ-গোসাঞি শ্রম দেখি' তাঁর ॥৯০॥

'বল্' 'বল্' বলি' প্রভু কহেন বার-বার ।
না গায় স্বরূপ-গোসাঞি শ্রম দেখি' তাঁর ॥৯০॥

বল্—गाओ; **বল্**—गाओ; **বলি'**—कहकर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **কহেন**—कहने लगे; **বার-বার**—बारम्बार; **না**—नहीं; **গায়**—गाया; **স্বরূপ-গোসাঞি**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **শ্রম**—थकान को; **দেখি'**—देखकर; **তাঁর**—चैतन्य महाप्रभु की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने बारम्बार कहा, "गाओ, गाते रहो! गाते रहो!" किन्तु महाप्रभु की थकान को देखते हुए स्वरूप दामोदर ने उसे फिर नहीं गाया।

'বল্' 'বল্' প্রভু বলেন, ভক্ত-গণ শুনি' ।
চৌদিকেতে সবে মেলি' করে হরি-ধ্বনি ॥৯১॥

'बल्' 'बल्' प्रभु बलेन, भक्त-गण शुनि' ।
चौदिकेते सबे मेलि' करे हरि-ध्वनि ॥ ९१ ॥

बल् बल्—गाते रहो, गाते रहो; **प्रभु बलेन**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **भक्त-गण**—सभी भक्तोंने; **शुनि'**—सुनकर; **चौ-दिकेते**—चारों ओर; **सबे**—सबने; **मेलि'**—एकत्र; **करे हरि-ध्वनि**—हरिनाम का कीर्तन करने लगे।

अनुवाद

जब भक्तों ने महाप्रभु को "गाते रहो!" कहते सुना, तब वे सब उनके चारों ओर एकत्र हो गये और एक साथ हरिनाम का कीर्तन करने लगे।

রামানন্দ-রায় তবে প্রভুরে বসাইলা ।
বীজনাদি করি' প্রভুর শ্রম ঘুচাইলা ॥ ৯২ ॥
रामानन्द-राय तबे प्रभुरे वसाइला ।
वीजनादि करि' प्रभुर श्रम घुचाइला ॥ ९२ ॥

रामानन्द-राय—रामानन्द राय; **तबे**—उस समय; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **वसाइला**—को बैठाया; **वीजन-आदि करि'**—पंखा झलकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **श्रम**—थकान; **घुचाइला**—दूर की।

अनुवाद

उस समय रामानन्द राय ने महाप्रभु को बैठाया और उन पर पंखा झलकर उनकी थकान दूर की।

প্রভুরে লঞা গেলা সবে সমুদ্রের তীরে ।
স্নান করাঞা পুনঃ তাঁরে লঞা আইলা ঘরে ॥ ৯৩ ॥
प्रभुरे लञा गेला सबे समुद्रेर तीरे ।
स्नान कराञा पुनः ताँरे लञा आइला घरे ॥ ९३ ॥

प्रभुरे—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा**—लेकर; **गेला**—गये; **सबे**—सब; **समुद्रेर तीरे**—समुद्र तट पर; **स्नान कराञा**—स्नान कराया; **पुनः**—पुनः; **ताँरे**—उनको; **लञा आइला**—लौटा ले आये; **घरे**—उनके घर।

अनुवाद

तब सारे भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु को समुद्र तट ले गये और उन्हें स्नान कराया। अन्त में वे उन्हें घर लौटा ले आये।

ভোজন করাঞা প্রভুরে করাইলা শয়ন ।
রামানন্দ-আদি সবে গেলা নিজ-স্থান ॥৯৪॥

भोजन कराञा प्रभुरे कराइला शयन ।
रामानन्द-आदि सबे गेला निज-स्थान ॥ ९४॥

भोजन कराञा—भोजन कराने; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कराइला शयन**—उन्हें लिटा दिया; **रामानन्द-आदि**—रामानन्द राय इत्यादि; **सबे**—वे सब; **गेला**—गये; **निज-स्थान**—अपने घरों को।

अनुवाद

महाप्रभु को दोपहर का भोजन कराने के बाद उन्हें लिटा दिया गया। तब रामानन्द इत्यादि सारे भक्त अपने-अपने घरों को लौट गये।

এই ত' কহিলুঁ প্রভুর উদ্যান-বিহার ।
বৃন্দাবন-ভ্রমে যাহাঁ প্রবেশ তাঁহার ॥৯৫॥

एइ त' कहिलुँ प्रभुर उद्यान-विहार ।
वृन्दावन-भ्रमे याहाँ प्रवेश ताँहार ॥ ९५॥

एइ त'—इस तरह; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **उद्यान-विहार**—पुष्पवाटिका का भ्रमण; **वृन्दावन-भ्रमे**—वृन्दावन समझकर; **याहाँ**—जहाँ; **प्रवेश**—प्रवेश; **ताँहार**—उनका।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु के पुष्पवाटिका भ्रमण की लीला का वर्णन किया है। महाप्रभु ने वृन्दावन समझकर इस पुष्पवाटिका में प्रवेश किया था।

প্রলাপ সহিত এই উন্মাদ-বর্ণন ।
শ্রী-রূপ-গোসাঞি ইহা করিয়াছেন বর্ণন ॥৯৬॥

प्रलाप सहित एइ उन्माद-वर्णन ।
श्री-रूप-गोसाञि इहा करियाछेन वर्णन ॥ ९६ ॥

प्रलाप—प्रलाप; **सहित**—सहित; **एइ**—यह; **उन्माद**—उन्माद का; **वर्णन**—वर्णन; **श्री-रूप-गोसाञि**—श्री रूप गोस्वामी; **इहा**—इस प्रकार; **करियाछेन वर्णन**—वर्णन किया है।

अनुवाद

वहाँ पर उन्होंने दिव्य उन्माद तथा प्रलाप प्रकट किया, जिसे रूप गोस्वामी ने अपनी 'स्तवमाला' में सुन्दर ढ़ंग से इस प्रकार अंकित किया है।

पयो-राशेस्तीरे स्फुरदुपवनाली-कलनया
मुहुर्वृन्दारण्य-स्मरण-जनित-प्रेम-विवशः ।
क्वचित्कृष्णावृत्ति-प्रचल-रसनो भक्ति-रसिकः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ९७ ॥

पयः-राशेः—समुद्र के; **तीरे**—तट पर; **स्फुरत्**—सुन्दर; **उपवन-आली**—उद्यान; **कलनया**—देखकर; **मुहुः**—निरन्तर; **वृन्दारण्य**—वृन्दावन का जंगल; **स्मरण-जनित**—समझकर; **प्रेम-विवशः**—कृष्ण-प्रेम से पूर्णतया विह्वल होकर; **क्वचित्**—कभी-कभी; **कृष्ण**—कृष्ण का पवित्र नाम; **आवृत्ति**—उच्चारण करते; **प्रचल**—निरन्तर चलती रहती; **रसनः**—जिनकी जीभ; **भक्ति-रसिकः**—भक्ति में दक्ष; **सः**—वह; **चैतन्यः**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **किम्**—क्या; **मे**—मेरी; **पुनः अपि**—पुनः; **दृशोः**—आँखों के; **यास्यति**—समक्ष; **पदम्**—मार्ग में।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु सर्वोच्च भक्त हैं। समुद्र तट पर विचरण करते हुए कभी-कभी वे पास ही सुन्दर उद्यान देखते और उसे वृन्दावन का जंगल समझ बैठते। इस तरह वे कृष्ण-प्रेम से पूर्णतया विह्वल हो जाते

तथा पवित्र नाम का कीर्तन और नृत्य करने लगते। जब वे 'कृष्ण! कृष्ण' का उच्चारण करते, तो उनकी जीभ निरन्तर चलती रहती। क्या वे पुनः मेरे नेत्रों के समक्ष दृष्टिगोचर होंगे?"

तात्पर्य

यह श्लोक रूप गोस्वामी कृत *स्तवमाला* में प्रथम चैतन्याष्टक का छठा श्लोक है। यह वहीं से उद्धृत हुआ है।

अनन्त चैतन्य-लीला ना याय लिखन ।
दिँ-मात्र देखाञा ताहा करिये सूचन ॥९८॥

अनन्त चैतन्य-लीला ना याय लिखन ।
दिंक्-मात्र देखाञा ताहा करिये सूचन ॥ ९८ ॥

अनन्त—अनन्त; **चैतन्य-लीला**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **ना याय लिखन**—लिख पाना सम्भव नहीं; **दिक्-मात्र**—केवल इंगित कर सकता हूँ; **देखाञा**—दिखाने का; **ताहा**—उनका; **करिये सूचन**—मैंने परिचय दिया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ अनन्त हैं। उनको ठीक-ठीक लिख पाना सम्भव नहीं है। मैं उनका परिचय देने के प्रयास में उनको इंगित मात्र कर सकता हूँ।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥९९॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ ९९ ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्री रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों की; **यार**—जिनकी; **आश**—कामना करते हुए; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा

सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए उनके चरणचिह्नों पर चलते हुए मैं कृष्णदास श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्य लीला के अन्तर्गत श्री चैतन्य महाप्रभु का दिव्योन्माद शीर्षक पन्द्रहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।